हरिभूमि

महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि

रोहतक, रविवार 8 मार्च 2026

10 रोडवेज सब डिपो के जल्द शुरू होने की जगी उम्मीद...

11 कांग्रेस पार्टी ने किया विरोध प्रदर्शन हरदीपपुरी के इस्तीफा देने...

दुकानदारों की बढ़ी चिंता : ग्राहकों की कमी से रोजी-रोटी पर असर

जेसीबी से तोड़ी जा रही पुरानी सड़कें

पुल बाजार से महावीर चौक तक अधूरी सड़क का होगा निर्माण

- गत 11 नवंबर 2024 को पूर्व मंत्री एवं विधायक ओमप्रकाश यादव ने नगर परिषद चेयरपर्सन कमलेश सैनी एवं अन्य अधिकारियों की मौजूदगी में किया था शिलान्यास

राजकुमार ⏭ नारनौल

शहर के मुख्य बाजार में लंबे समय से अधूरी पड़ी सड़क के निर्माण का कार्य एकबार फिर शुरू कर दिया गया है। पुल बाजार से महावीर चौक तक की सड़क को दोबारा बनाने के लिए नगर परिषद की ओर से जेसीबी मशीन लगाकर पुरानी सड़क को तोड़ने का काम शुरू कर दिया गया। सड़क टूटने के कारण फिलहाल मुख्य बाजार में आवागमन लगभग बंद हो गया है, जिससे दुकानदारों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। नगर परिषद ने इस सड़क के लिए 181.09 लाख रुपये का अनुमानित बजट निर्धारित किया हुआ है।

बता दें कि यह सड़क शहर के सबसे व्यस्त व्यापारिक मार्गों में से एक है। सड़क टूटने और रास्ता बंद होने के कारण ग्राहक बाजार तक नहीं पहुंच पा रहे हैं, जिससे दुकानदारों की बिक्री प्रभावित हो रही है। कई दुकानदारों का कहना है कि बाजार में पहले ही कारोबार सामान्य से कम चल रहा था, ऐसे में सड़क निर्माण शुरू होने से उनकी रोजी-रोटी पर और असर पड़ने लगा है। दरअसल, इस सड़क का निर्माण कार्य पहले भी शुरू किया गया था, लेकिन व्यापारियों की मांग पर इसे बीच में ही रोक दिया गया था। अब मार्च महीने की शुरुआत होते ही नगर परिषद ने दोबारा निर्माण कार्य शुरू कर दिया है।

जानकारी के अनुसार इस सड़क समेत चार सड़कों के निर्माण कार्य का शिलान्यास नारनौल के विधायक एवं पूर्व मंत्री ओमप्रकाश यादव ने गत 11 नवंबर 2024 को किया था। इस परियोजना के तहत किला रोड स्थित बसंती देवी धर्मशाला से लेकर आजाद चौक, पुल बाजार होते हुए महावीर चौक तक सड़क का निर्माण किया जाना है। नगर परिषद पहले चरण में किला रोड से पुल बाजार तक की सड़क का निर्माण करवा चुकी है, लेकिन पुल बाजार से आगे का हिस्सा अधूरा रह गया था। अब उसी अधूरे हिस्से का निर्माण कार्य दोबारा शुरू किया गया है। इस सड़क के निर्माण के लिए लगभग 181.09 लाख रुपये का बजट निर्धारित किया गया है। नगर परिषद की योजना है कि सड़क को पूरी तरह से नया बनाकर यातायात के लिए बेहतर बनाया जाए, ताकि भविष्य में बाजार क्षेत्र में जाम और आवागमन की समस्या कम हो सके।

नारनौल। पुल बाजार के पास पुरानी सड़क तोड़ती जेसीबी। फोटो : हरिभूमि

यह बोलीं चेयरपर्सन

पुल बाजार से महावीर चौक तक की मुख्य बाजार वाली सड़क अधूरी थी। इस सड़क को व्यापारियों की मांग पर ही रोका गया था। तब उन्होंने व्यापारिक सीजन पीक पर होने की बात कही थी। अब लावणी का दौर शुरू हो गया है। इस कारण ग्राहक कम ही बाजार पहुंच रहे हैं। ऐसे में व्यापारियों की मांग के अनुरूप ही निर्माण कार्य शुरू किया गया है। नई सड़क बनने से शहरवासियों ही नहीं, बाजार आने वाले लोगों को जरूर राहत मिलेगी। बेहतरीन एवं गुणवत्तापूर्ण सड़क बनवाना ही हमारा मकसद है।

-कमलेश सैनी, चेयरपर्सन, नगर परिषद, नारनौल

मार्च में फिर शुरू हुआ निर्माण

व्यापारियों की मांग के अनुसार नगर परिषद ने निर्माण कार्य को मार्च महीने में फिर से शुरू करने का निर्णय लिया। अब जैसे ही मार्च का महीना शुरू हुआ, नगर परिषद की टीम ने जेसीबी मशीनों की मदद से पुल बाजार से महावीर चौक तक पुरानी सड़क को तोड़ने का काम शुरू कर दिया है। निर्माण कार्य शुरू होने के बाद मुख्य बाजार में वाहनों की आवाजाही काफी हद तक बंद हो गई है। इससे जहां ग्राहकों को बाजार तक पहुंचने में परेशानी हो रही है, वहीं दुकानदारों को भी चिंता सता रही है कि अगर काम लंबा चला तो कारोबार पर असर पड़ सकता है।

व्यापारियों की मांग पर रोका गया था काम

गत नवंबर 2025 में जब नगर परिषद इस सड़क का निर्माण करवा रही थी, उस समय शहर में शादी-विवाह और सर्दी के मौसम के चलते बाजार में खरीदारी का सीजन चरम पर था। व्यापारियों को आशंका थी कि अगर उस समय सड़क तोड़कर निर्माण शुरू किया गया तो ग्राहकों का बाजार में आना मुश्किल हो जाएगा और व्यापार पर असर पड़ेगा। इसी को देखते हुए बाजार के व्यापारियों ने प्रशासन और विधायक को ज्ञापन देकर सड़क निर्माण कार्य को फिलहाल रोकने की मांग की थी। व्यापारियों का कहना था कि पीक सीजन में सड़क निर्माण शुरू करने से उन्हें भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। व्यापारियों की इस मांग को देखते हुए नगर परिषद ने उस समय निर्माण कार्य को रोक दिया था और पुल बाजार से आगे का हिस्सा अधूरा छोड़ दिया गया था।

बेहतर सड़क से मिलेगी राहत

नगर परिषद के अनुसार सड़क निर्माण पूरा होने के बाद इस मार्ग पर यातायात व्यवस्था पहले से बेहतर हो जाएगी। नई सड़क बनने से बाजार क्षेत्र में आवाजाही सुगम होगी और लोगों को भी बेहतर सुविधा मिलेगी। स्थानीय लोगों का मानना है कि यह सड़क शहर के सबसे महत्वपूर्ण बाजार मार्गों में से एक है, इसलिए इसका मजबूत और व्यवस्थित निर्माण जरूरी है। हालांकि फिलहाल निर्माण कार्य के कारण लोगों और व्यापारियों को कुछ समय तक असुविधा झेलनी पड़ेगी, लेकिन काम पूरा होने के बाद इससे बाजार क्षेत्र की यातायात व्यवस्था में काफी सुधार होने की उम्मीद है।

सैनी सभा कॉलेजियम चुनाव आज : 47 वार्ड में होंगे चुनाव, 108 पहले ही निर्विरोध

- त्रिवार्षिक चुनाव में पहले होंगे कॉलेजियम चुनाव, इसके बाद कॉलेजियम के वोट से चुने जाएंगे प्रधान सहित कार्यकारिणी

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

शहर की सबसे बड़ी सामाजिक संस्था सैनी सभा (रजि.) के त्रिवार्षिक चुनाव के तहत प्रथम चरण में कॉलेजियम चुनाव आज रविवार को होंगे। आपको बताते चले कि सभा के 155 कॉलेजियम वार्ड में पहले ही 91 वार्ड ऐसे थे, जहां से एक-एक आवेदन ही आया था। ऐसे में इन 91 वार्ड से निर्विरोध कॉलेजियम बन गए है। इनके अलावा 64 वार्ड ऐसे थे जहां एक से अधिक यानि कुल 139 नामांकन जमा हुए थे। इन जमा नामाकंनों को विड्रा करने की तिथि में 139 में से 23 नामांकन वापस हुए।

इस वजह से 64 वार्ड में से 17 वार्ड में निर्विरोध कॉलेजियम ओर चुने गए है। इस तरह कुल 108 वार्ड से निर्विरोध कॉलेजियम बन गए है। अब 155 में से 108 को छोड़ दे तो बाकी 47 वार्डों पर सहमति नहीं बनने पर चुनाव हो रहे है। यह चुनाव सैनी सभा परिसर में होगा। इस मतदान का समय सुबह नौ बजे से शाम चार बजे तक रखा गया है। मतदाता मत का उपयोग केवल फोटो युक्त पहचान पत्र एवं कोलेजियम सदस्यता प्रमाण पत्र के दिखाने पर ही कर सकेगा।

मतदान केंद्र में तथा मतदान केंद्र के 50 मीटर की दूरी में किसी भी प्रकार के चुनावी बूथ की स्थापना निषिद्ध है। इस चुनावी प्रक्रिया में चुनाव अधिकारी संदीप सैनी एडवोकेट, उप चुनाव अधिकारी सुरेंद्र सैनी व आब्जर्वर रोशनलाल सैनी जुटे हुए है।

इसके साथ ही जिला फर्म एवं सोसाइटी रजिस्ट्रार कार्यालय की ओर से निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए ऑब्जर्वर के रूप में डॉ. योगेंद्र सिंह यादव को भी नियुक्त किया है।

नारनौल। इन मत पेटी में होगा उम्मीदवारों का रिजल्ट। फोटो : हरिभूमि

उम्मीदवारों के लिए आवश्यक निर्देश

- प्रत्येक उम्मीदवार का मतदान केंद्र में प्रवेश, चुनाव अधिकारी द्वारा जारी प्रवेश पत्र के द्वारा होगा।
- प्रत्येक उम्मीदवार का एक ही एजेंट होगा।
- मतदान केंद्र/बूथ में तथा मतगणना के दौरान उम्मीदवार और एजेंट में से केवल एक ही व्यक्ति उपस्थित रह सकता है।
- मतदान केंद्र/बूथ में तथा मतगणना के दौरान मोबाइल फोन अंदर ले जाना वर्जित है।
- वोटर चेलेंज फीस 500 रुपये प्रति वोट होगी तथा यह फीस पीठासीन अधिकारी को मौके पर ही चेलेंज से पूर्व जमा करवानी होगी।
- मतदान के दौरान मत पत्र पांच रंगों के प्रयोग होंगे। परंतु एक पद के मत पत्रों का रंग एक ही होगा।
- मतदान केंद्र पर किसी भी वाद विवाद के लिए वाद विवाद निपटारा समिति का फैसला सर्वमान्य होगा। जोकि मतदान के समय मतदान केंद्र पर मौजूद रहेगी।

47 वार्ड के लिए बनाए गए 10 बूथ

बूथ नंबर	इलेक्टोरल वार्ड नंबर
1	6, 14, 16, 23, 26
2	27, 39, 41, 46, 51
3	62, 63, 65, 70, 71
4	72, 74, 75, 77, 79
5	81, 84
6	85, 87, 88, 90, 91
7	92, 95, 102, 105, 108
8	117, 120, 122, 123, 128
9	134, 136, 137, 138, 140
10	143, 152, 153, 154, 155

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

BLOOD DOCTOR

डॉ नील कमल

पेट, आंत, लीवर अस्पताल

PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE NABH [ENTRY LEVEL] CERTIFIED

पता : बावल रोड़, नजदीक कोर्ट/जैन मन्दिर, रेवाड़ी

9350177585

DR. DEEPIKA YADAV
MBBS, MD MEDICINE,
DM CLINICAL
HAEMATOLOGY
(AIIMS NEW DELHI)

Dr. Surekha Rao (Consultant Gi Pathologist)
Dr. Sachin (Consultant Gastroenterologist)
Dr. Neel Kamal (Director and Head of Gastroenterologists, Hematologist)
Dr. Kamal S Yadav Liver Transplant Surgeon
Dr. Aamir Saif (R.M.0)

Blood रोग, खून कैंसर, कम Platelet, Lymphoma का उपचार

सभी मेजर TPA की कैशलैश सुविधा उपलब्ध है।

हरियाणा सरकार के पैनल पर

रेवाड़ी में पहली बार खून की बीमारी का उपचार
कमजोरी, थकान, रक्त रोग और BLOOD CANCER

सभी पेट, आंत, लिवर, ब्लड, प्लेटलेट्स के सम्बन्धी रोग, रक्त कैंसर का इलाज उपलब्ध है।

EXPERTISE IN
- HEMOGLOBINOPATHIES
- ANEMIA
- BLEEDING DISORDERS
- THROMBOTIC DISORDERS
- MALIGNANT HAEMATOLOGY
- BONE MARROW TRANSPLANT

दिल्ली, गुड़गाँव, जयपुर की सभी सुविधाएं दक्षिण हरियाणा रेवाड़ी में पहली बार:

ENDOSCOPIC ULTRASOUND पेट, आंत, लीवर, पेनक्रियाज के सभी रोगों का निदान व उपचार

FIBRO SCAN लीवर की जाँच :- फैटी लीवर, लीवर की सूजन

MANOMETRY लम्बी कब्ज से बिना दवाई के छूटकारा

ERCP ENDOSCOPY COLONOSCOPY LIVER DISEASE PANCREATIC DISEASES

खबर संक्षेप

यादव सभा की मीटिंग आयोजित

महेंद्रगढ़। यादव सभा की कार्यकारिणी की मीटिंग कन्वीनर डॉ. राजवीर सिंह यादव की अध्यक्षता में हुई। मीटिंग में सर्वसमिति से फैसला हुआ कि मेजर जनरल डॉक्टर अरविंद यादव, जिनका 26 जनवरी पर राष्ट्रपति ने पदक से सम्मानित किया है, उनकों यादव सभा 15 मार्च को रविवार प्रातः 11 बजे सम्मानित करेगी। इस सम्मान समारोह में सभी लोग सादर आमंत्रित हैं। मेजर जनरल अरविंद सिंह यादव को उनकी रक्षा क्षेत्र में विशिष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया है।

हांसी में शक्ति प्रदर्शन करेगी जेजेपी

नांगल चौधरी। जेजेपी हलका प्रधान एडवोकेट प्रमोद ताखर की अगुवाई में इकबालपुर नंगली, तोताहेड़ी, अकबरपुर, भोजावास, सिरोही बहाली, दौंगली में जनसंपर्क किया। इस दौरान हलका प्रभारी विनोद भील व प्रदेश सचिव हजारीलाल लंबोरा मुख्य रूप से मौजूद रहे। उन्होंने ग्रामीणों को हांसी में 13 मार्च को प्रस्तावित डॉ. अजय सिंह चौटाला के जन्मदिन समारोह का निमंत्रण दिया। कार्यकर्ताओं को अनुशासन बनाए रखने की जिम्मेवारी सौंपी गई तथा बूथ वाइज वाहन उपलब्ध कराने की योजना बनाई। जजपा कार्यकर्ताओं को संघर्ष की ताकत विरासत से मिली है, जोकि विषम परिस्थितियों में भी जनता का साथ नहीं छोड़ते। जजपा सुप्रीमो डॉ. अजय सिंह चौटाला का 13 मार्च को हांसी में जन्मदिन मनाया जाएगा।

संघीवाड़ा में 51 कुण्डीय हवन आज

नारनौल। शहर की समाजसेवी संस्था आर्य समाज संघीवाड़ा में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 51 कुण्डीय हवन का आयोजन आठ मार्च को किया जाएगा। कार्यक्रम संयोजक वेदप्रकाश आर्य ने बताया कि स्वामी दयानन्द ने स्त्री सशक्तिकरण के लिए कार्य किया था, इसलिए आर्य समाज उनका ऋणी है। बैठक में संरक्षक वासुदेव यादव, डॉ. कृष्णा आर्या, प्रधान अरुणा आर्या, प्रभातीलाल, सुरेन्द्र शास्त्री, विद्यादेवी आर्या, मास्टर रमेश, मंत्री विश्वपाल आर्य, राजबाला, सुमन, सुरेश खजांची, गीताबाई प्राचार्य, सावंत सिंह आदि उपस्थित रहे।

कार की टक्कर से बाइक सवार भाई-बहन घायल

नारनौल। शहर में सुभाष पार्क के सामने तेज रफ्तार कार की टक्कर से बाइक सवार भाई-बहन गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई और आसपास के लोगों की भीड़ जुट गई। जानकारी अनुसार शनिवार प्रातः करीब साढ़े 11 बजे गांव गोद निवासी अभिषेक अपनी बहन अंजना के साथ बाइक पर सवार होकर विजय अस्पताल से वापस अपने गांव गोद जा रहे थे। जब वे कुछ ही दूरी पर सुभाष पार्क के सामने पहुंचे, तब सामने से आ रही स्विफ्ट कार ने रॉन्ग साइड में आकर बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही दोनों भाई-बहन सड़क पर गिर गए और गंभीर रूप से घायल हो गए। मौके पर मौजूद लोगों ने तुरंत एंबुलेंस को सूचना दी, जिसके बाद दोनों घायलों को नागरिक अस्पताल पहुंचाया।

पॉलिटेक्निक में अभिभावक अध्यापक बैठक कल

नारनौल। बाबा खेतानाथ गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक में विद्यार्थियों की पढ़ाई और प्रगति को लेकर 9 मार्च को इस सेमेस्टर की पहली अभिभावक-अध्यापक बैठक आयोजित की जाएगी। यह बैठक हरियाणा राज्य तकनीकी शिक्षा बोर्ड के निर्देशानुसार आयोजित की जा रही है। संस्थान के प्राचार्य इंजीनियर अनिल यादव ने बताया कि इस बैठक का मुख्य उद्देश्य अभिभावकों को विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति से अवगत कराना है। बैठक के दौरान अभिभावकों को अपने बच्चों की उपस्थिति, सैशनल टेस्ट के अंक, पिछले सेमेस्टर के परिणाम तथा अन्य शैक्षणिक रिकॉर्ड की जानकारी दी जाएगी। कॉलेज प्रशासन द्वारा सभी विभागाध्यक्षों को निर्देश दिए गए हैं कि वे ट्यूटरों के माध्यम से छात्रों के अभिभावकों को बैठक की सूचना दें।

काफी लंबे समय से क्षेत्र के लोग कर रहे थे मांग, प्रोजेक्ट जल्द शुरू होने की संभावना

रोडवेज सब डिपो के जल्द शुरू होने की उम्मीद, 45 पद मंजूर

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

रोडवेज सब डिपो के जल्द शुरू होने की उम्मीद जगी है और परिवहन विभाग की ओर से सब डिपो के संचालन के लिए 45 पदों को मंजूरी दे दी गई है। इससे लंबे समय से अटके पड़े इस प्रोजेक्ट के जल्द शुरू होने की संभावना बढ़ गई है। परिवहन विभाग के पत्र के अनुसार महेंद्रगढ़ में हरियाणा रोडवेज का सब डिपो स्थापित करने और संचालन के लिए विभिन्न श्रेणियों के कुल 45 पद स्वीकृत किए गए हैं। इनमें यार्ड मास्टर, स्टेशन सुपरवाइजर, फोरमैन, जूनियर ऑडिटर, हेड मैकेनिक, हेड इलेक्ट्रिशियन, मैकेनिक, इलेक्ट्रिशियन, टायरमैन, क्लर्क, असिस्टेंट मैकेनिक, स्टोर कीपर, हेल्पर, चपरासी और स्वीपर जैसे पद शामिल हैं।

महेंद्रगढ़। बस स्टैंड स्थित वर्कशॉप भवन।

दरअसल, महेंद्रगढ़ बस स्टैंड परिसर में करीब सात करोड़ रुपये की लागत से रोडवेज सब डिपो के लिए वर्कशॉप भवन पहले ही बनकर तैयार हो चुका है।

इस प्रोजेक्ट की शुरुआत वर्ष 2014 में हुई थी, जब तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने शहर के आईटीआई ग्राउंड में क्षेत्रवासियों की मांग पर यहां रोडवेज सब डिपो बनाने की घोषणा की थी। इसके बाद सरकार बदलने पर नौ अप्रैल 2016 को तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने महेंद्रगढ़ की सब्जी मंडी में विकास कार्यों की घोषणा के दौरान बस स्टैंड परिसर में सब डिपो का शिलान्यास किया। दिसंबर 2019 में भवन निर्माण का कार्य शुरू हुआ और दिसंबर 2020 तक लगभग पूरा भी हो गया। ठेकेदार ने एक फरवरी 2021 को भवन की चाबी बस स्टैंड इंचार्ज को सौंप दी थी। हालांकि इसके बाद करीब तीन साल तक विभागीय निरीक्षण के दौरान वर्कशॉप भवन में कमियां निकालने और उन्हें दुरुस्त कराने की प्रक्रिया चलती रही, जिसके कारण सब डिपो शुरू नहीं हो पाया। मार्च दो 2024 में चुनाव से पहले तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने सात मार्च को इसका वर्चुअल उद्घाटन किया था, जिससे लोगों को उम्मीद जगी थी कि जल्द ही महेंद्रगढ़ का अपना रोडवेज सब डिपो शुरू होगा। अब 45 पदों की स्वीकृति के बाद क्षेत्र के लोगों को उम्मीद है कि सब डिपो जल्द शुरू होगा, जिससे लंबी दूरी की बस सेवाएं, रात्रि बस सेवा और स्थानीय रूटों पर रोडवेज बसों की सुविधा मिल सकेगी।

यह कहते हैं विधायक

विधायक कंवर सिंह यादव ने कहा कि क्षेत्र के लोगों की लंबे समय से चली आ रही मांग को ध्यान में रखते हुए महेंद्रगढ़ में सब डिपो शुरू करवाने के लिए लगातार प्रयास किए गए थे। अब विभाग की ओर से 45 पदों को भरने का लेटर जारी कर दिया गया है, जिससे जल्द ही महेंद्रगढ़ में सब डिपो शुरू होने का मार्ग प्रशस्त हो गया है। विधायक ने कहा कि महेंद्रगढ़ में सब डिपो शुरू होने से क्षेत्र के विकास को नई गति मिलेगी। इससे न केवल परिवहन व्यवस्था मजबूत होगी बल्कि आसपास के गांवों के लोगों को भी बेहतर बस सुविधा मिल सकेगी। इससे महेंद्रगढ़ क्षेत्र की कनेक्टिविटी मजबूत होगी और लोगों को बस सेवाओं का अधिक लाभ मिलेगा। सब डिपो बनने से नई बसों का संचालन भी बढ़ेगा, जिससे यात्रियों को समय पर और बेहतर सेवाएं मिल पाएंगी। उन्होंने बताया कि 18 मई को आयोजित धन्यवाद रैली के दौरान उन्होंने महेंद्रगढ़ में सब डिपो की मांग प्रमुखता से उठाई थी। यह क्षेत्र की जनता की लंबे समय से चली आ रही मांग थी और इसके शुरू होने से महेंद्रगढ़ व आसपास के गांवों के लोगों को परिवहन सुविधा में बड़ी राहत मिलेगी।

बाघोत गांव में शराब ठेके पर हुई डकैती में दो आरोपित गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज कनीना

महेंद्रगढ़ में सीआईए ने कनीना सदर थाना क्षेत्र के बाघोत गांव में शराब ठेके पर हुई डकैती की वारदात को सुलझाने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने शुक्रवार को झज्जर के साल्हावास क्षेत्र से दो आरोपितों को गिरफ्तार किया। जिनकी पहचान झज्जर जिले के सिवाना निवासी सोमबीर थाना बेरी व कुगाई निवासी अंकित थाना सदर के रूप में हुई है। दोनों को कोर्ट में पेश किया गया। यह वारदात एक व दो मार्च की मध्यरात्रि लगभग डेढ़ से दो बजे के बीच अंजाम दी गई थी।

जानकारी के अनुसार तीन से चार अज्ञात बदमाशों ने बाघोत गांव में बहु रोड स्थित शराब ठेके के सेल्समैन को बंधक बना लिया था। बदमाशों ने ठेकेदार को भविष्य में ठेका न चलाने व जान से मारने की धमकी भी दी थी।

बदमाश ठेके से अंग्रेजी, बीयर व देसी शराब एक अज्ञात गाड़ी में भरकर ले गए। इसके अलावा गल्ले में रखी नकदी व सबूत मिटाने के लिए सीसीटीवी कैमरे का डीवीआर भी अपने साथ ले गए थे। घटना के बाद इलाके में दहशत का माहौल बन गया था।

कनीना। पुलिस गिरफ्त में आरोपित।

पुलिस ने बरामद की शराब पेटियां

पुलिस ने गहन जांच करते हुए तीन मार्च को ही डकैती में लूटी गई शराब की 154 पेटियां अंग्रेजी, देसी और बीयर बरामद कर ली थी। वारदात में इस्तेमाल की गई एक पिकअप गाड़ी को भी जब्त किया गया था। पुलिस का कहना है कि यह बरामदगी मामले की जांच में अहम सुराग साबित हुई। सीआईए महेंद्रगढ़ की ओर से गिरफ्तार किए गए दोनों आरोपितों से पूछताछ में कनीना क्षेत्र में ही एक अन्य शराब ठेके पर हुई डकैती की वारदात का भी खुलासा हुआ है। पुलिस अब आरोपितों से गहनता से पूछताछ कर रही है, ताकि वारदात में शामिल अन्य आरोपितों को जल्द गिरफ्तार किया जा सके तथा लूटी गई नकदी व डीवीआर बरामद किए जा सकें।

बाबा गोसाई मंदिर में हुआ सम्मेलन

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

कनीना के बाबा गोसाई मंदिर में सनातन हिन्दू धर्म सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि प्रमुख समाजसेवी अतरलाल एडवोकेट थे। अध्यक्षता रामसिंह ने की। मुख्य अतिथि अतरलाल ने धर्म के 10 लक्षणों का वर्णन करते हुए सनातन हिन्दू धर्म की शिक्षाओं को जन जन तक पहुंचाने की अपील की। उन्होंने कहा कि धर्म हमारी रक्षा करता है। हमें अपने कार्य धर्मनिष्ट होकर करने चाहिए। उन्होंने कहा कि धार्मिक आस्था बहुत बड़ी चीज है, जो धाव सो पाव। हजारों साल की गुलामी के बाद भी धार्मिक आस्था के कारण भारत की एकता अखंडता, सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत मजबूत है। उन्होंने बाबा गोसाई भारती मंदिर के नवीनीकरण के लिए मंदिर कमेटी को 31000 रुपये भेंट किए। रामसिंह ने बाबा मंदिर के नवीनीकरण के लिए लोगों से बढ़ चढ़कर सहयोग करने का अनुरोध किया। मौके पर बाबा राजेश दास नगरपार्षद, राजकुमार, रामसिंह, हरेन्द्र शर्मा, महेश, मनोज, रघबीर, संतोष, कमला, रामरती, अंगूरी देवी, राजेन्द्र आदि मौजूद थे।

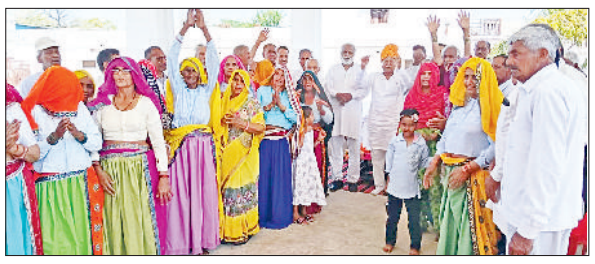
नारनौल। सनातन धर्म सम्मेलन को सम्बोधित करते अतरलाल एडवोकेट।

सिंचाई करते समय करंट लगने से किसान की मौत

नारनौल। गांव खैराना (बेवल) में शनिवार सुबह फसल में सिंचाई करते एक किसान करंट लग गया, जिससे उसकी मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस ने नागरिक अस्पताल में मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। गांव खैराना निवासी करीब 40 वर्षीय हरीसिंह सुबह अपने खेतों में गेहूं की फसल में पानी दे रहा था। इस दौरान लोहे की लाइन पलटते वक्त पाइप ऊपर से जा रहे बिजली के तारों को छू गया, जिससे हरीसिंह वहीं बेहोश होकर गिर पड़ा। आसपास के लोगों ने जब हरीसिंह को खेत में पड़े देखा तो इसकी सूचना उसके परिजनों को दी। परिजनों ने उसको इलाज के लिए नागरिक अस्पताल में पहुंचाया। जहां पर चिकित्सकों ने उसको मृत घोषित कर दिया। मृतक के भाई भीमसिंह ने बताया कि हरीसिंह की शादी करीब 18 साल पहले हुई थी।

रसोई गैस के दाम बढ़ाकर बजट का उड़ाया मजाकः चंद्रप्रकाश

रसोई सिलेंडरों पर 60 व कमर्शियल सिलेंडरों पर 115 रुपये बढ़ाए

हरिभूमि न्यूज ⏭ नांगल चौधरी

कांग्रेस के प्रत्याशी रहे चंद्रप्रकाश एडवोकेट रसोई गैस सिलेंडरों ने दाम बढ़ाने पर रोष जताया है। कहा कि तीन दिन पहले पेश हुए बजट में महंगाई नहीं बढ़ाने का आश्वासन दिया गया था, लेकिन बजट प्रस्तुत होते ही सरकार ने सिलेंडर के दाम बढ़ा दिए। जिससे मध्यम वर्गीय परिवारों का आर्थिक बजट खराब होने का खतरा बढ़ गया। उन्होंने प्रदेश सरकार ने विशेष राहत पैकेज देने की गुहार लगाई है अन्यथा कांग्रेस कार्यकर्ताओं की ओर से आंदोलन की रूपरेखा बनाई जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदूषण पर अंकुश लगाने के मकसद से सरकार ने रसोई गैस सिलेंडरों को गांव गांव तक पहुंचाया है। अमीरों के साथ मध्यम व बीपीएल परिवारों की रसोई में एलपीजी सिलेंडरों का इस्तेमाल होने लगा है। चुनावों के दौरान भाजपा ने गैस के दामों में कटौती करने का आश्वासन दिया था। इसके बाद बजट में भी कोई नया टैक्स नहीं लगाने की सुर्खियां बटोरी गई थी, लेकिन तीन दिन बाद ही सरकार ने रसोई सिलेंडरों पर 60 व कमर्शियल सिलेंडरों पर 115 रुपये तक बढ़ोतरी कर दी। जिससे ग्रामीणों का घरेलू बजट बिगड़ने का खतरा बढ़ गया है।

हरियाणा ग्रामीण बैंक को मिला नया नेतृत्व

सुमन्त कुमार ने अध्यक्ष पद का संभाला कार्यभार

महेंद्रगढ़। हरियाणा ग्रामीण बैंक में नेतृत्व परिवर्तन के क्रम में सुमन्त कुमार ने अध्यक्ष पद का कार्यभार ग्रहण कर लिया है। जानकारी देते हुए रीजनल आफिस महेंद्रगढ़ के सिनियर मैनेजर राजेश गुर्जर ने बताया कि सुमन्त कुमार इससे पूर्व पंजाब नेशनल बैंक के डिजिटल बैंकिंग विभाग में महाप्रबंधक के पद पर कार्यरत थे। उन्हें बैंकिंग क्षेत्र में 30 से अधिक वर्षों का गहन, बहुआयामी एवं नीतिगत अनुभव प्राप्त है। प्रधान कार्यालय में रणनीतिक एवं प्रौद्योगिकी आधारित पहलों का नेतृत्व करने के साथ-साथ उन्होंने फील्ड स्तर पर भी सशक्त प्रशासनिक दायित्व निभाए हैं। उन्होंने वित्तीय समावेशन को बैंक की मूल प्रतिबद्धता बताते हुए ग्रामीण एवं वंचित वर्ग तक बैंकिंग सेवाओं की प्रभावी पहुंच सुनिश्चित करने का संकल्प दोहराया। साथ ही भारतीय रिजर्व बैंक, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक, राज्य सरकार तथा प्रायोजक बैंक, पंजाब नेशनल बैंक के साथ समन्वित एवं सक्रिय सहयोग के माध्यम से बैंक को सुदृढ़, पारदर्शी और सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। बैंक परिवार को विश्वास है कि उनके दूरदर्शी, संतुलित एवं परिणामोन्मुख नेतृत्व में हरियाणा ग्रामीण बैंक वित्तीय सुदृढ़ता, सेवा उत्कृष्टता और ग्रामीण समृद्धि के नए आयाम स्थापित करेगा।

उज्जीवन बैंक ने आंगनबाड़ी केंद्र 29 का करवाया नवीनीकरण

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

उज्जीवन स्माल फाइनेंस बैंक की तरफ से चलाए जा रहे सामाजिक विकास कार्यक्रम 'छोटे कदम' के तहत उज्जीवन बैंक शाखा के अंतर्गत वार्ड नंबर दस स्थित आंगनबाड़ी केंद्र-29 के सम्पूर्ण भवन के नवीनीकरण एवं रंग-रोगन का कार्य सम्पन्न हुआ।

इस कार्य का हर्षोल्लास के साथ उद्घाटन उच्च अधिकारियों, बैंक स्टाफ एवं गणमान्य लोगों की उपस्थिति में किया गया। आंगनबाड़ी भवन का नवीनीकरण पिछले कई वर्षों से नहीं हो पाया था एवं अत्यंत दयनीय स्थिति में था। शौचालयों व्यवस्था भी ठीक नहीं थी। आंगनबाड़ी भवन की छत, फ्लोर एवं दीवारों की स्थिति भी खराब थी। दीवारों से प्लास्तर व रंग उखड़ गया था। बरसात के मौसम में सीलन बहुत ज्यादा रहती थी तथा पानी टपकता था। बरामदा खुला होने के कारण पूर्णतः उपयोग में नहीं आता था। बंद रहने पर खाली बरामदा में असामाजिक तत्व आकर शराब का सेवन करते थे और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाते थे।

बच्चों को शौचालय हेतु पुराने बने हुए शौचालय का उपयोग करना पड़ता था। बच्चों के लिये पोषाहार सामग्री रखने के लिए, भोजन हेतु रसोई घर की उपयुक्त व्यवस्था नहीं थी। इस समस्या के समाधान हेतु उज्जीवन बैंक एवं परिणाम फाउंडेशन की तरफ से कार्य किया गया है, जिसके फलस्वरूप आंगनबाड़ी केंद्र-29 में रसोई घर का निर्माण, सम्पूर्ण भवन की छत की वाटर प्रूफिंग, शौचालयों के नवीनीकरण एवं संपूर्ण विद्यालय के रंग-रोगन का कार्य किया जा सका है।

नारनौल। आंगनबाड़ी अधिकारी को सम्मानित करते बैंक अधिकारी।

महेंद्रगढ़ में करोड़ों की ठगीः एमएसएमई और जमीन में निवेश के नाम पर हड़पे 3.94 करोड़

महेंद्रगढ़। महेंद्रगढ़ शहर में निवेश के नाम पर धोखाधड़ी का एक बड़ा मामला सामने आया है। शहर के कुराहवटा रोड पर रहने वाले पिता-पुत्र ने पांच लोगों को सुनहरे भविष्य और एमएसएमई (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) में निवेश का झांसा देकर उनसे करीब 3.94 करोड़ रुपये की भारी-भरकम राशि हड़प कर ली। पुलिस ने पीड़ितों की शिकायत पर आरोपितों के खिलाफ धोखाधड़ी और साजिश रचने का मुकदमा दर्ज कर जांच आर्थिक अपराध शाखा को सौंप दी है।

निवेश के नाम पर बिछाया जाल

पुलिस को दी गई शिकायत में पीड़ितों ने बताया कि मूल रूप से सेहलंगा (झज्जर) निवासी मीर सिंह और उसके पुत्र आशुतोष, जो वर्तमान में महेंद्रगढ़ की डिफेंस कॉलोनी में रह रहे हैं, ने उन्हें अपने घर बुलाकर मोटी कमाई का लालच दिया। आरोपितों ने उन्हें जमीन खरीदने और एमएसएमई सेक्टर में पैसा लगाने के लिए मोटिवेट किया। भरोसे में आकर पीड़ितों ने अलग-अलग किस्तों में करोड़ों रुपये उनके बताए खातों में ट्रांसफर कर दिए।

इन लोगों से हुई ठगी

पीड़ितों द्वारा पुलिस को सौंपी गई डिटेल के अनुसार ठगी की राशि इस प्रकार है

बिहारीलाल निवासी बुचौली : 1,73,50,000 (एक करोड़ तिहत्तर लाख पचास हजार)

सुमन कुमारी (पालड़ी पनिहारी) : 1,35,00,000 (एक करोड़ पैंतीस लाख)

लक्ष्मण सिंह पुनिया (झगड़ौली) : 57,00,000 (सत्तावन लाख)

सत्यबीर सिंह (झगड़ौली) : 16,00,000 (सोलह लाख)

सज्जन सिंह (पालड़ी पनिहारी) : 12,50,000 (बारह लाख पचास हजार)

पुलिस कार्रवाई और जांच आर्थिक अपराध शाखा को

शिकायत के आधार पर थाना शहर महेंद्रगढ़ में आरोपितों के खिलाफ मुकदमा नंबर 32 दर्ज किया गया है। पुलिस ने आरोपितों के विरुद्ध आईपीसी की धारा 406 (अमानत में खयानत), 420 (धोखाधड़ी) और 120बी (आपराधिक साजिश) के तहत मामला दर्ज किया है।

पदोन्नति पर खोड़ में विदाई समारोह आयोजित

शिक्षिका मनोज कुमारी टीजीटी अंग्रेजी पद पर हुई पदोन्नत

मंडी अटेली। क्षेत्र के गांव खोड़ के राजकीय मॉडल प्राइमरी स्कूल में कार्यरत शिक्षिका मनोज कुमारी की पदोन्नति होने पर विद्यालय में विदाई एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। शिक्षिका मनोज कुमारी टीजीटी अंग्रेजी पद पर पदोन्नति हुई हैं। विद्यालय स्टॉफ एवं ग्रामीणों ने मिलकर मनोज कुमारी को भावभीनी विदाई दी। मुख्याध्यापक अनूप सिंह ने कहा कि मनोज कुमारी एक मेहनती और विद्यार्थियों को प्रेरित करने वाली शिक्षिका रही हैं। पढ़ाने में उनकी विशेष लगन थी और बच्चों के साथ उनका व्यवहार भी बेहद स्नेहपूर्ण था, जिस कारण विद्यार्थी उनसे काफी जुड़े हुए थे। विद्यालय स्टाफ और ग्रामीणों ने मनोज कुमारी को उनके 10 वर्षों के समर्पित सेवाकाल के लिए सम्मानित किया। छात्रों ने भावपूर्ण विदाई गीत प्रस्तुत किए। इस मौके पर क्लस्टर हेड यशपाल सिंह, पूर्व मुख्याध्यापक कृष्ण कुमार, सरपंच प्रतिनिधि मूलसिंह चौहान, साधुसिंह, सुमेर सिंह, शिक्षिका मुकेश रानी, राकेश, सपना, सुदेश, मुनेश, रामनिवास एवं नवीत कुमार सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

किसानों ने मार्केट रेट कमेटी के चेयरमैन के साथ की मीटिंग, नहीं निकला कोई परिणाम

60 गांवों के किसानों के खेत हुए प्रभावित

खेतड़ी-नरेला लाइन का उचित मुआवजा नहीं मिलने पर किसानों ने किया प्रदर्शन

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

खेतड़ी-नरेला लाइन से पीड़ित किसान बार-बार जिला प्रशासन के पास जाकर मार्केट रेट तय करने की गुहार लगा चुके हैं, लेकिन पूरे देश व राज्य पर लागू होने वाली पालिसी से केवल जिला महेंद्रगढ़ के किसानों को वंचित रखा जा रहा है। इस कारण इस जिले के प्रभावित किसानों को उचित मुआवजा नहीं मिल पा रहा, जबकि इस लाइन से जिले के लगभग 60 गांवों के किसानों के खेत प्रभावित हुए हैं। किसी की जमीन गई तो किसी की फसल उजाड़ दी गई और किसी के मकान तबाह कर दिए गए, लेकिन अब तक पीड़ितों को उचित मुआवजा नहीं मिला है। उचित मुआवजे की मांग को लेकर पीड़ित किसान एसडीएम-कम-मार्केट रेट कमेटी के चेयरमैन अनिरुद्ध यादव मीटिंग की गई, लेकिन उसका को नतीजा नहीं निकला है। इस बैठक में किसानों का नेतृत्व भारतीय किसान कामगार अधिकार मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सतेंद्र लोहचब ने किया।

नारनौल। लघु सचिवालय पार्क में प्रदर्शन करने पहुंचे किसान व एसडीएम अनिरुद्ध यादव को ज्ञापन सौंपते किसान। फोटो : हरिभूमि

यह बोले किसान नेता

लोहचब ने बताया कि एमआरसी कमेटी चेयरमैन से किसानों की काफी मांगों को लेकर विचार-विमर्श हुआ, जिसमें किसानों की समस्याओं जैसे एचटी लाइन के अंतर्गत आने वाले मकान व ट्यूबवेल आदि का उचित मुआवजा देने की मांग की गई। मकान एवं ट्यूबवेल के अलावा खेती की जमीन भी खेतड़ी-नरेला लाइन से प्रभावित होने पर मुआवजा देने की मांग की गई, लेकिन कोई उचित कार्यवाही नहीं की गई। कमेटी चेयरमैन अनिरुद्ध यादव ने बताया कि इस समस्या के समाधान के लिए अब सप्ताह के हर बुधवार को पंचायत भवन नारनौल में समाधान शिविर का आयोजन किया जाएगा। दूसरी ओर किसान नेता सतेंद्र लोहचब ने बताया कि खेतड़ी-नरेला एचटी लाइन के लिए प्रशासन की तरफ से पावरग्रिड को काफी बार पत्राचार किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन की तरफ से दिया गया जवाब भी किसानों के लिए संतोषजनक नहीं है, क्योंकि जब भी किसान जिला प्रशासन से मिले हैं, यही जवाब मिल रहा है तथा उन्हें अगली बार सुनवाई होने का आश्वासन देकर टरका दिया जाता है।

ये रहे मौजूद

इस बैठक में जिला महेंद्रगढ़ से किसान प्रतिनिधि मनोज कुमार (गुढ़ा), सत्यवीर प्रिंसिपल, धर्मपाल सरपंच, हवासिंह खेड़ा, विनोद चौधरी गहली, रामनिवास पाटोदा, ओमप्रकाश, रमेश, महेंद्र, संदीप, बिजेंद्र, राजू, हिम्मत सिंह समेत अनेक मौजूद रहे।

आरोपित को न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया

मूसनौता में युवक की हत्या मामले में पुलिस ने एक आरोपित को पकड़ा

आरोपितों ने आपस में हुई कहासुनी की रंजिश के चलते दिया था वारदात को अंजाम

- पुलिस ने घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण कर महत्वपूर्ण साक्ष्य व मृतक की गाड़ी को कब्जे में लिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ के कड़े दिशानिर्देशों के तहत कार्रवाई करते हुए थाना निजामपुर पुलिस ने गांव मूसनौता के पास हुई एक व्यक्ति की हत्या के मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए एक आरोपित को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार किए गए आरोपित की पहचान प्रवीण कुमार निवासी ढाणी भोजावाली नांगल दर्गु के रूप में हुई है, जिसे पुलिस ने शुक्रवार को भूणा का जाल मूसनौता क्षेत्र से गिरफ्तार किया। प्रारंभिक पुलिस जांच में सामने आया है कि आरोपितों ने आपस में हुई कहासुनी की रंजिश के चलते इस जघन्य वारदात को अंजाम दिया था। आरोपित को न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

हरिभूमि
मूसनौता के बस स्टैंड पर मध्य रात्रि हमलावरों ने किया ताबड़तोड़ हमला
डेढ़ माह पहले जमानत पर आए पुष्कर गुर्जर पर लाठी, रॉड व सरिया से ताबड़तोड़ हमला कर मौत के घाट उतारा
पपला गुर्जर के गुर्गों की दुश्मनी में एक की हत्या!
पुलिस को यह दी शिकायत
हमलावर और मृतक थे पहले दोस्त
इन पर किया है हत्या का केस दर्ज
पुलिस ने शुरू की कार्रवाई
आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए टीम गठित

नारनौल। पुलिस गिरफ्त में आरोपित तथा दैनिक हरिभूमि में प्रकाशित समाचार। फोटो : हरिभूमि

इस संदर्भ में मृतक के भाई सुभाष निवासी सादा की ढाणी मूसनौता ने थाना निजामपुर में दी गई अपनी शिकायत में बताया था कि छह मार्च की रात्रि करीब 12 बजे उसका भाई पुष्कर गाड़ी से अपने घर लौट रहा था। इसी दौरान मूसनौता बस स्टैंड के पास दो कैंपर गाड़ियों में सवार होकर आए बदमाशों ने उसकी गाड़ी को टक्कर मारकर रास्ता रोक लिया और लोहे की रॉड, सरियों तथा डंडों से हमला कर पुष्कर की हत्या कर दी। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस की टीमें मौके पर पहुंची और घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण कर महत्वपूर्ण साक्ष्य व मृतक की गाड़ी को कब्जे में लिया।

अन्य आरोपित जल्द होंगे गिरफ्तार

पुलिस ने शिकायत के आधार पर आरोपितों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धाराओं के तहत हत्या व अन्य संगीन अपराधों का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी थी। गिरफ्तार आरोपित को शनिवार को न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड पर किया गया है। रिमांड के दौरान आरोपित से वारदात के संबंध में गहनता से पूछताछ की जाएगी और इसमें शामिल उसके अन्य फरार साथियों के ठिकानों के बारे में पता लगाकर उन्हें भी जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

महेंद्रगढ़। विजेता टीम को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

खेलकूद स्पर्धा में आरपीएस डिग्री कॉलेज रहा ओवरऑल चैंपियन

- आरपीएस ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

राव पहलाद सिंह ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन बलाना में डॉ. ओपी यादव मेमोरियल वार्षिक खेलकूद स्पर्धा स्पर्धा का समापन हो गया। स्पर्धा के पहले दिन शुरुआत एमडी देसी रॉकस्टार की परफॉर्मेंस से हुई। पहले दिन आरपीएस इंजीनियरिंग कॉलेज तथा आरपीएस डिग्री कॉलेज की लड़कों तथा लड़कियों की टीम के बीच वॉलीबॉल, बास्केटबॉल तथा कबड्डी के मैच हुए। स्पर्धा के सह-संयोजक दिनेश कुमार तथा रोहित यादव ने बताया कि दूसरे दिन रेस 100 मी., 200 मी., 400 मी., रेस 800 मी., 1500 मी., रिले रेस, लॉन्ग जंप, जैवलिन थ्रो, डिस्कस थ्रो, शॉट पुट, हाई जंप, कबड्डी, वॉलीबॉल, बास्केटबॉल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस के मैच हुए। इस वार्षिक खेलकूद स्पर्धा में आरपीएस डिग्री कॉलेज ओवरऑल चैंपियन रहा तथा इंजीनियरिंग कॉलेज रनर-अप रहा। जतिन यादव पुत्र हेमंत बेस्ट एथलीट तथा लड़कियों में हिमांशी पुत्री कंवरपाल डिग्री कॉलेज बेस्ट एथलीट रही। विजेताओं को कॉलेज निदेशक डॉ. महेश कुमार यादव, रजिस्टर डॉ. देवेंद्र सिंह यादव, डीन एकेडमिक प्रो. राजेंद्र सिंह यादव, प्राचार्य डॉ. देवेंद्र काद्यान, डीन डॉ. हेमंत कुमार आदि द्वारा ट्राफियां तथा सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया। चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव तथा सीईओ इंजीनियर मनीष राव ने सभी को स्पर्धा के सफल आयोजन के लिए बधाई दी।

100 मीटर रेस छात्रा में नेहा प्रथम, किरण द्वितीय, शशि तृतीय रही। 100 मीटर रेस छात्र में जतिन प्रथम, यश द्वितीय, हर्ष तृतीय रहा। 200 मीटर रेस छात्रा में नेहा प्रथम, हिमांशी द्वितीय, मुस्कान तृतीय रही। 200 मीटर रेस छात्र में जतिन ने प्रथम, जितेंद्र ने दूसरा तथा यश ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। 400 मी रिले रेस छात्र में यश राहुल, हिमांशु और जतिन की टीम ने प्रथम, निशांत, साहिल, पीयूष और हर्ष की टीम ने दूसरा तथा विक्रम, हेमंत अंकित और प्रिंस की टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। 1500 मीटर रेस छात्र में प्रिंस ने प्रथम, पीयूष ने दूसरा तथा पारस ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। बास्केटबॉल छात्र में डिग्री कॉलेज विजेता रहा तथा इंजीनियरिंग कॉलेज दूसरे स्थान पर रहा।

इंजीनियरिंग कॉलेज की टीम रही विजेता

वॉलीबॉल वुमेन के मुकाबले में इंजीनियरिंग कॉलेज की टीम विजेता रही तथा डिग्री कॉलेज की टीम दूसरे स्थान पर रही। वॉलीबॉल छात्र मैच में आरपीएस डिग्री कॉलेज विजेता रहा तथा इंजीनियरिंग कॉलेज दूसरे स्थान पर रहा। कबड्डी छात्रा के मैच में डिग्री कॉलेज की टीम विजेता रही तथा इंजीनियरिंग कॉलेज की टीम दूसरे स्थान पर रही।

देवयानी के प्रियांशु का इंस्पायर मानक योजना में चयन

महेंद्रगढ़। इंस्पायर मानक अवार्ड के लिए देवयानी इंटरनेशनल स्कूल बेवल का छात्र प्रियांशु यादव पुत्र विक्की यादव मुंडियाखेड़ा का नाम सूची में दर्ज हुआ।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के द्वारा बच्चों से उनके इनोवेटिव आईडिया लिया जाता है। उन्ही में से एक प्रोजेक्ट प्रियांशु यादव का सलेक्ट किया गया। प्रियांशु यादव ने स्कूल बस को सोलर पैनल से चलाकर ऊर्जा के नवीनीकरण साधनों पर बल दिया। राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान के तहत उसे 10 हजार की राशि प्रोत्साहन के रूप में प्रदान की गई।

यदुवंशी कॉलेज में वाद-विवाद स्पर्धा आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

यदुवंशी डिग्री कॉलेज में विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास को बढ़ाने के लिए वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में कॉलेज के विभिन्न विभाग के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत कॉलेज प्रशासन द्वारा की गई, जिसमें विद्यार्थियों को वाद-विवाद प्रतियोगिता के नियमों के बारे में अवगत करवाया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में तार्किक सोच आत्मविश्वास और मंच पर बोलने की क्षमता का विकास करना था। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विद्यार्थियों ने पक्ष और विपक्ष दोनों में अपने विचार प्रस्तुत किए, कुछ विद्यार्थियों ने अपने तर्कों को ऐतिहासिक और सामाजिक तथ्यों के साथ प्रस्तुत किया, जिससे कार्यक्रम और रोचक बन गया। श्रोताओं ने प्रतिभागियों के विचारों को ध्यान पूर्वक सुना और बार-बार तालियां बजाकर उनका उत्साहवर्धन किया। चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि वाद विवाद प्रतियोगिता विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम से विद्यार्थियों के अंदर आत्मविश्वास बढ़ता है और वह अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना सिखाते हैं।

महेंद्रगढ़। प्रतियोगिता में भाग लेते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

फैंसी ड्रेस में बच्चों ने फल और सब्जियों का दिया संदेश

महेंद्रगढ़। रामचन्द्र पब्लिक स्कूल में आज नन्हे-मुन्ने बच्चों के लिए फल और सब्जियां थीम पर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में बच्चों ने सेब, आम, अंगूर, गाजर, टमाटर, बैंगन, मटर आदि की आकर्षक वेशभूषा पहनकर सभी कामन मोह लिया। बच्चों ने अपनी प्यारी प्रस्तुतियों के माध्यम से सभी को स्वस्थ रहने के लिए फल और सब्जियां खाने का संदेश दिया।

खबर संक्षेप

खेड़ी में पॉलिटेक्निक का सारा श्रेय आरती राव को: बबली

मंडी अटेली। अटेली विधानसभा में कनीना खंड के गांव खेड़ी में पॉलिटेक्निक कॉलेज की मंजूरी मिलने पर क्षेत्र में खुशी का माहौल है। ग्रीवेंस कमेटी सदस्य एडवोकेट बबली यादव ने कहा कि स्वास्थ्य मंत्री आरती राव के विशेष प्रयासों से क्षेत्र के विद्यार्थियों को तकनीकी शिक्षा का बड़ा तोहफा मिला है। इससे अटेली क्षेत्र के युवाओं को अब तकनीकी शिक्षा के लिए दूर-दराज के शहरों में नहीं जाना पड़ेगा। बबली यादव ने कहा कि लंबे समय से क्षेत्र के लोगों की मांग थी कि अटेली विधानसभा में तकनीकी शिक्षा के लिए पॉलिटेक्निक कॉलेज की स्थापना की जाए। अब सरकार द्वारा खेड़ी गांव में पॉलिटेक्निक कॉलेज की मंजूरी मिलने से यह मांग पूरी हो गई है।

श्रीकृष्ण स्कूल भुंगारका की ऑनलाइन स्कॉलरशिप परीक्षा आज

नारनौल। श्रीकृष्ण सीनियर सेकेंडरी स्कूल भुंगारका की ओर से विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ऑनलाइन स्कॉलरशिप टेस्ट का आयोजन रविवार सुबह साढ़े 10 बजे किया जाएगा। स्कूल प्रबंधन के अनुसार स्कॉलरशिप टेस्ट का प्रथम चरण रविवार आयोजित किया जाएगा। जिसमें कक्षा दूसरी से आठवीं तक के विद्यार्थी भाग लेंगे। यह परीक्षा पूरी तरह से ऑनलाइन माध्यम से आयोजित की जाएगी। जिससे विद्यार्थी अपने घर बैठे ही इस परीक्षा में भाग ले सकेंगे। इसके अतिरिक्त स्कॉलरशिप टेस्ट का द्वितीय चरण कक्षा नौवीं से 11वीं तक के विद्यार्थियों के लिए आयोजित किया जाएगा। यह परीक्षा 15 व 22 मार्च को दोपहर एक बजे ऑनलाइन आयोजित की जाएगी। प्राचार्य वेदपाल यादव ने बताया कि विद्यालय का उद्देश्य विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ उनकी प्रतिभा को पहचान कर उन्हें आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करना है।

आर्य समाज का दो दिवसीय 36वां वार्षिक उत्सव शुरु, भजन-उपदेश किए प्रस्तुत

कनीना। गांव रसूलपुर में शनिवार से आर्य समाज का 36वां दो दिवसीय वार्षिक उत्सव शुरू हुआ। जिसमें दूरदराज से आए प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। आर्य समाज के सतीश आर्य ने बताया कि समारोह में संगीता आर्या सहारनपुर, अनुज शास्त्री देहरादून को आमंत्रित किया गया है, जो भजनोपदेशक के माध्यम से सामाजिक बुराइयों पर चोट करेंगे। उन्होंने बताया कि दो दिवसीय समारोह का समापन रविवार को होगा। समारोह में नीरज मेद्यार्थी, विजय पाल, महाशय बंसीराम, सतवीर सिंह भजन उपदेश प्रस्तुत करेंगे।

बीआर ज्ञानदीप के छात्रों का शैक्षणिक भ्रमण

- भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने ढोसी की पहाड़ी की रमणीय वादियों का अवलोकन किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

बीआर ज्ञानदीप विद्यालय सुरजनवास के विद्यार्थियों का एक दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण ढोसी की पहाड़ी तथा खालड़ा बाबा मंदिर में उत्साहपूर्वक आयोजित किया गया। इस दौरान विद्यार्थियों ने प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हुए धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने ढोसी की पहाड़ी की रमणीय वादियों का अवलोकन किया तथा खालड़ा बाबा मंदिर में श्रद्धापूर्वक दर्शन कर आशीर्वाद लिया। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को क्षेत्र के धार्मिक महत्व, पर्यावरण संरक्षण तथा प्राकृतिक स्थलों के संरक्षण के प्रति जागरूक किया। इस प्रकार के शैक्षणिक भ्रमण से बच्चों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त होता है, जिससे उनके ज्ञान और दृष्टिकोण का विस्तार होता है। प्राचार्य रामवीर यादव ने कहा कि ऐसे शैक्षणिक भ्रमण विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चेयरमैन रूपराम यादव ने कहा कि इस प्रकार की गतिविधियां बच्चों में अनुशासन, सहयोग तथा प्रकृति के प्रति प्रेम की भावना को मजबूत करती हैं।

जीनियस एकेडमी में मनाया अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

जीनियस एकेडमी में में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि एकेडमी की छात्रा रही सोनम धनौंदा सीआईएसएफ थी। आंगनबाड़ी सुपरवाइजर सुनैना गाहडा, अंग्रेजी अध्यापिका पूनम, नर्सिंग ऑफिसर पूजा जोनावास ने शिरकत की। समारोह की अध्यक्षता एकेडमी चेयरपर्सन सोनिका यादव ने की। समारोह में मंच संचालन शिखा कारोली व रेनु लुखी ने किया। छात्रा लक्ष्मी, निकिता व हेमलता ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। साप्ताहिक परीक्षा में अव्वल स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया, जिनमें मनीषा रिवासा, प्रियंका गादड़वास, साक्षी ऊंची भांडोर, निकिता गादड़वास, निशा भागेश्वरी व पूजा बलाना अव्वल रहे। एकेडमी डायरेक्टर अमित यादव ने कहा कि नारियों में अपरिमित शक्ति और समताएं विद्यमान है।

यूपीएससी में सफलता प्राप्त करने पर सम्मानित

नारनौल। संघ लोक सेवा आयोग की ओर से सिविल सेवा परीक्षा का परीणाम घोषित किया गया। जिसमें सीएल पब्लिक स्कूल के होनहार छात्र नितेश कुमार पुत्र श्रद्धानंद ने राष्ट्रीय स्तर पर 847वीं रैंक हासिल कर अपना, अपने स्कूल व क्षेत्र का नाम रोशन किया। नितेश बचपन से ही दिव्यांग है, लेकिन उन्होंने इस कमी को कभी अपने सपनों के आडे नहीं आने दिया। नितेश कुमार ने इस परीक्षा को उत्तीर्ण करने में लगातार मेहनत करते हुए पांचवें प्रयास में सफलता हासिल की है। नितेश शुरू से ही मेधावी छात्र रहा है।

आंबेडकर चौक पर जिला कांग्रेस कमेटी, महिला कांग्रेस और एससी सेल के पदाधिकारियों ने की नारेबाजी

कांग्रेस पार्टी ने किया विरोध प्रदर्शन हरदीपपुरी के इस्तीफा देने की मांग

हस्ताक्षर अभियान चलाया और हरदीपपुरी का पुतला फूंका

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

शहर के आंबेडकर चौक पर जिला कांग्रेस कमेटी, महिला कांग्रेस और एससी सेल के पदाधिकारियों ने केंद्रीय मंत्री हरदीपपुरी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान एक हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया और उनका पुतला फूंका गया। कांग्रेसियों ने मांग की कि एपस्टीन प्रकरण में नाम सामने आने के बाद हरदीपपुरी तुरंत अपने पद से इस्तीफा दें। जिला कांग्रेस कमेटी के प्रधान सत्यवीर झूकिया ने कहा कि पूरे देश से आवाज उठ रही है, हरदीपपुरी इस्तीफा दो। ऐसे गंभीर मामले में नैतिकता के आधार पर उन्हें तुरंत पद छोड़ देना चाहिए। सरकार अगर पारदर्शिता और जवाबदेही में विश्वास करती है तो इस मामले की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। पूर्व सीपीएस अनीता यादव ने कहा कि हमारे देश में महिलाओं की सुरक्षा और संवेदनशील मामलों में किसी भी प्रकार का समझौता नहीं होना चाहिए। अगर उच्च पद पर बैठे लोग ऐसे मामलों में शामिल पाए जाते हैं तो उनका पद छोड़ना ही लोकतंत्र और कानून की गरिमा बनाए रखने का सही तरीका है।

जिला महिला कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. राजवंती यादव ने कहा कि यह देश की गरिमा और महिलाओं की सुरक्षा से जुड़ा संवेदनशील मामला है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार इस मामले पर चुप्पी साधे हुए है, जो बेहद चिंताजनक है। उन्होंने ट्रेड डील का भी जिक्र करते हुए कहा कि देश और जनता के हितों के बजाय सरकार निजी समझौते करती दिख रही है। एससी सैल के जिलाध्यक्ष तोताराम कोहली ने कहा कि जनता इस तरह के मामलों पर चुप नहीं बैठेगी।

उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि यदि हरदीप पुरी अपने पद से इस्तीफा नहीं देते हैं, तो कांग्रेस पूरे देश में आंदोलन को और तेज करेगी। ऐसे मामलों में सिर्फ नैतिकता ही नहीं, बल्कि जनता का विश्वास भी सवालों के घेरे में आता है। प्रदर्शन के पश्चात कांग्रेस कार्यालय में सत्यवीर झूकिया ने जिला कांग्रेस कमेटी की मासिक बैठक ली, जिसमें संगठन को मजबूत करने, विस्तार और आगामी जनसंपर्क अभियान की रणनीति पर चर्चा हुई।

महेंद्रगढ़। चौक पर प्रदर्शन करते हुए। फोटो : हरिभूमि

ये रहे मौजूद

प्रदर्शन में संदीप राव, राकेश कुमार (पूर्व जज), महेंद्र राता, डॉ. धीरज, रंगलाल सहित जिला कांग्रेस कमेटी, महिला कांग्रेस और एससी सेल के कई पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में आरपीएस महेंद्रगढ़ का दबदबा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में आयोजित विभिन्न अंतर-विद्यालयी प्रतियोगिता में आरपीएस के विद्यार्थियों ने अपनी असाधारण प्रतिभा और कौशल का प्रदर्शन कर विद्यालय का नाम रोशन किया है। विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में जिले के अनेक विद्यालयों ने भाग लिया, जिसमें आरपीएस के छात्रों ने लगभग हर विधा में शीर्ष स्थान प्राप्त कर अपनी शैक्षणिक और रचनात्मक उत्कृष्टता को सिद्ध किया।

क्विज प्रतियोगिता में सकीना और तानिया ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि हिमांशी और जयश्री की जोड़ी दूसरे स्थान पर रही। वर्किंग मॉडल व नवाचार में जूनियर कैटेगरी में ओजस आर्य और आरव ने प्रथम स्थान हासिल किया। वहीं ध्रुव और धैर्य धनवाल ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर तकनीकी सूझबूझ का परिचय दिया। भाषण व कला की हिंदी भाषण में यशिका यादव ने प्रथम और अंग्रेजी में आशी ने द्वितीय स्थान पाया।

पेंटिंग में अंश ने पहला, हिमांशी ने दूसरा और वेदांशी ने तीसरा स्थान हासिल किया। 'बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट' में भावी, डिशिता और कृति की टीम प्रथम रही। भारतीय ज्ञान प्रतियोगिता, पोस्टर प्रेजेंटेशन और सांत्वना पुरस्कार श्रेणी में भी विद्यालय के छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने कहा कि विद्यार्थियों की यह जीत उनकी कड़ी मेहनत और शिक्षकों के सही मार्गदर्शन का परिणाम है। सीईओ इंजी. मनीष राव और डिप्टी सीईओ कुनाल राव ने कहा कि विद्यालय भविष्य में भी विद्यार्थियों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करता रहेगा।

महेंद्रगढ़। विद्यार्थियों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

अंतर्राष्ट्रिय महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं.... नारी शक्ति को नमन

8 मार्च को हमेशा की तरह महिला दिवस मनाया जाता है। आज सबसे ज्यादा महिला सशक्तिकरण की बातें होंगी। लेकिन महिला सशक्तीकरण क्या है यह कोई नहीं जानता। महिला सशक्तीकरण एक विवेकपूर्ण प्रक्रिया है। हमने अति महत्वाकांक्षा को सशक्तिकरण मान लिया है। मुझे लगता है महिला दिवस का औचित्य तब तक प्रमाणित नहीं होता जब तक कि सच्चे अर्थों में महिलाओं की दशा नहीं सुधरती।

महिला नीति है लेकिन क्या उसका क्रियान्वयन गंभीरता से हो रहा है। यह देखा जाना चाहिए कि क्या उन्हें उनके अधिकार प्राप्त हो रहे हैं। वास्तविक सशक्तीकरण तो तभी होगा जब महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होंगी। और उनमें कुछ करने का आत्मविश्वास जागेगा। यह महत्वपूर्ण है कि महिला दिवस का आयोजन सिर्फ रस्म अदायगी भर नहीं रह जाए। वैसे यह शुभ संकेत है कि महिलाओं में अधिकारों के प्रति समझ विकसित हुई है अपनी शक्ति को स्वयं समझकर, जागृति आने से ही महिला घरेलू अत्याचारों से निजात पा सकती है। कामकाजी महिलाएं अपने उत्पीड़न से छुटकारा पा सकती हैं तभी महिला दिवस की सार्थकता सिद्ध होगी। मनु स्मृति में स्पष्ट उल्लेख है कि जहां स्त्रियों का सम्मान होता है वहां देवता रमण करते हैं, वैसे तो नारी को विश्वभर में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है किंतु भारतीय संस्कृति एवं परंपरा में देखें तो स्त्री का विशेष स्थान सदियों से रहा है।

फिर भी अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर वर्तमान में यदि खुले मन से आकलन करें तो पाते हैं कि महिलाओं को मिले सम्मान के उपरांत भी ये दो भागों में विभक्त हैं। एक तरफ एकदम से दबी, कुचली, अशिक्षित और पिछड़ी महिलाएं हैं तो दूसरी तरफ प्रगति पथ पर अग्रसर महिलाएं। कई मामलों में तो पुरुषों से भी आगे नई ऊंचाइयां छूती महिलाएं हैं। जहां एक तरफ महिलाओं के शोषण, कुपोषण और कष्टप्रद जीवन के लिए पुरुष प्रधान समाज को जिम्मेदार ठहराया जाता है, वहीं यह भी कटु सत्य है कि महिलाएं भी महिलाओं के पिछड़ने के लिए जिम्मेदार हैं।

यह भी सच है कि महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों ने ही स्त्री शक्ति को अधिक सहज होकर स्वीकार किया है, न सिर्फ स्वीकार किया अपितु उचित सम्मान भी दिया, उसे देवी माना और देवी तुल्य मान रहा है, जिसकी कि वह वास्तविक हकदार भी है। इस बहस को महिला विरुद्ध पुरुष (जैसा की कुछ लोग अनावश्यक रूप से करते हैं) नहीं करते हुए सकारात्मक दृष्टि से देखें तो हर क्षेत्र में महिलाएं आगे बढ़ी हैं फिर भी अभी महिला उत्थान के लिए काफी कुछ किया जाना शेष है।

घर के चौके–चूल्हे से बाहर, व्यवसाय हो, साहित्य जगत हो, प्रशासनिक सेवा हो, विद.श सेवा हो, पुलिस विभाग हो या हवाई सेवा हो या फिर खेल का मैदान हो, महिलाओं ने सफलता का परचम हर जगह लहराया है। यहां तक कि महिलाएँ कई राष्ट्रों की राष्ट्राध्यक्ष भी रही हैं और कुछ तो वर्तमान में भी हैं। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं की यह सफलता निश्चित ही संतोष प्रदान करती है। ऐसे में यह भी आवश्यक है कि सुदृढ़ समाज और राष्ट्र के हित में महिला, पुरुष के मध्य प्रतिद्वंद्विता स्थापित नहीं की जाए वरन सहयोगात्मक संबंध बढ़ाए जाएं। शिक्षित एवं संपन्न महिलाओं को चाहिए कि वे पिछड़ी महिलाओं के लिए जो भी कर सकती हैं करें।

विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की दशा सुधारने पर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है क्योंकि महिलाएं महिलाओं की समस्याएं ही भलीभांति समझती हैं इसलिए शिक्षित एवं संपन्न महिलाएं इस दिशा में विशेष योगदान दे सकती हैं। निश्चित ही इस संदर्भ में पुरुषों को भी अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहना होगा। देखा जाए तो पुरुष स्वयं भी कई समस्याओं से ग्रस्त हैं, खासकर बेरा.जगारी की समस्या से। और इसीलिए महिला–पुरुष एक–दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं होते हुए परस्पर सहयोग की भावना से बराबरी से आगे बढ़ सकते हैं। तभी सामाजिक ढांचा और राष्ट्र भी सुदृढ़ बनेगा।

अत्याचार करने वाले किसी भी पुरुष के कारण संपूर्ण पुरुष जमात को दोष देने की होड़ से भी बचना हितकर रहेगा क्योंकि अत्याचार, व्यभिचार, दुराचार करने वाला सिर्फ अत्याचारी है, अपराधी है और उसे उसकी सजा मिलना चाहिए। महिलाओं को समान अधिकार। समान अवसर और ससम्मान स्वतंत्रता का पूर्ण अधिकार है। इसमें किसी संदेह की गुंजाइश भी नहीं है। हमें अपने लिए सिर्फ इतनी सी बात समझनी है कि अपनी प्रतिभा, दक्षता, क्षमता, अभिरूचि और रूझान को पहचानना है, ईश्वर ने हमें जिन गुणों से नवाजा है उन्हें निखारना है। यंत्रवत कार्य करने के बजाय स्वयं को प्रसन्न रखने के लिए काम करना है। आपको अपना परिवेश अपने आप प्रसन्न मिलेगा... दूसरे शब्दों में हर काम को प्रसन्नता से करें अपनी क्षमता का पूरा उपयोग करें। महिला दिवस केवल उत्सव नहीं, यह उस दिव्य ऊर्जा को प्रणाम करने का दिन है जो सृष्टि को गति देती है। भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में स्त्री को मात्र सामाजिक भूमिका से नहीं, बल्कि शक्ति स्वरूपा के रूप में देखा गया है।

जब हम देवी की उपासना करते हैं कृ चाहे वह दुर्गा हों, लक्ष्मी या सरस्वती कृ तब हम वास्तव में स्त्री के भीतर विद्यमान साहस, समृद्धि और ज्ञान की ही आराधना कर रहे होते हैं। जब हम दुर्गा की उपासना करते हैं तो हम साहस की आराधना करते हैं। लक्ष्मी की पूजा समृद्धि और संतुलन का प्रतीक है। सरस्वती ज्ञान और वाणी की पवित्रता का प्रतिनिधित्व करती हैं।

ये तीनों शक्तियां प्रत्येक स्त्री के भीतर विद्यमान हैं कृ प्रश्न केवल जागरण का है। ये तीनों शक्तियां हर स्त्री के भीतर विद्यमान हैं। स्त्री करुणा और शक्ति का संगम है। स्त्री का हृदय करुणा से भरा होता है, परंतु आवश्यकता पड़ने पर वही करुणा शक्ति में परिवर्तित हो जाती है। यही संतुलन उसे आध्यात्मिक रूप से विशेष बनाता है।

संवेदना से समाधि तक स्त्री का हृदय स्वाभाविक रूप से संवेदनशील, ग्रहणशील और करुणामय होता है। यही गुण उसे आध्यात्मिक मार्ग पर तीव्र गति से आगे बढ़ने की क्षमता देते हैं। जहां पुरुष तर्क से सत्य तक पहुंचता है, वहीं स्त्री अनुभव से सत्य को जीती है।

आध्यात्म केवल ध्यान या मंत्र जप नहीं हैय यह आत्मबोध की यात्रा है। जब स्त्री अपने भीतर के भय, अपराधबोध और सामाजिक बंधनों से ऊपर उठती है, तब वह अपने वास्तविक स्वरूप को पहच.ानती है।

आध्यात्मिक दृष्टि से स्त्री का मन ध्यान में शीघ्र स्थिर हो सकता है, क्योंकि उसमें स्वाभाविक समर्पण और भावनात्मक गहराई होती है। यदि वह अपनी ऊर्जा को बिखरने न दे, तो वह साधना में अद्भुत ऊंचाइयां छू सकती है।

स्त्री का वास्तविक सश.क्तिकरण बाहरी उपलब्धियों से पहले भीतर की जागृति से आता है। जब स्त्री स्वयं को केवल रिश्तों की पहचान से नहीं, बल्कि आत्मा के रूप में पहचानती है। तभी वह पूर्ण होती है।

भारतीय दर्शन कहता है कि शिव बिना शक्ति के शून्य हैं। शिव और शक्ति का मिलन ही सृष्टि का आधार है। इसका अर्थ है कृ स्त्री और पुरुष विरोधी नहीं, पूरक हैं। शिव और शक्ति के सिद्धांत को देखें तो, भारतीय दर्शन कहता है कि शिव बिना शक्ति के शून्य हैं। इसका अर्थ है कि चेतना (शिव) और ऊर्जा (शक्ति) का संतुलन ही सृष्टि का आधार है।

इसलिए ही तो कहा गया है कि नारी तू नारायणी।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
विशेष
अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
P-1
रोहतक,रविवार 8 मार्च 2026

हर क्षेत्र में फहरा रहा आधी आबादी का परचम

अब वो दिन लद गए, जब आधी आबादी के लिए कुछ निश्चित कार्यक्षेत्र ही हुआ करते थे। आज के दौर में बेटियां हर उस क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं, जिन्हें पहले उनके लिए वर्जित माना जाता था। देश की सुरक्षा से लेकर वैज्ञानिक अनुसंधान तक और खेल के मैदानों में भी कामयाबी की नित नई मिसालें गढ़ रही हैं। आधी आबादी के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ते कदम पर एक नजर।

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

अभी सुबह के 4 बज रहे हैं। हरियाणा के एक छोटे से गांव में रहने वाली 19 साल की एक लड़की अपने जूतों में फीते कस रही है। उसके सामने कोई दर्शक नहीं है, कोई कैमरा नहीं है। है तो सिर्फ एक लंबा सा ट्रैक और दिल दिमाग में एक रंगीन सपना। यह सपना एथलेटिक्स में कुछ कर दिखाने का है। यह सपना किसी एक हरियाणवी लड़की का ही नहीं है, बल्कि आज भारत की हजारों-लाखों किशोरियों और युवतियों की आंखों में खेल से लेकर सेना और विज्ञान जैसे सभी जटिल और एक जमाने तक पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में कुछ कर दिखाने का है। साल 2026 का भारत इस मायने में ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है, क्योंकि आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां युवा महिलाएं दस्तक न दे रही हों। अब देश में कोई ऐसा क्षेत्र विशेष नहीं रहा, जिसे एक्सक्लूसिविली पुरुषों का वर्चस्व वाला क्षेत्र कहा जा सके। सभी क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर भारत की युवा महिलाएं खड़ी हैं।

गढ़ रहीं जीत की नई परिभाषा

भारत में खेल लंबे समय तक पुरुषों के वर्चस्व वाला क्षेत्र माना जाता रहा है। लेकिन हाल के कुछ दशकों में युवा महिलाओं ने इस धारणा को बदल दिया है। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर भारत आदि की युवा महिला एथलीटों ने ओलंपिक, एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व चैंपियनशिप में कामयाबी के झंडे गाड़े हैं। साल 2024 के पेरिस ओलंपिक में भारत की महिला खिलाड़ियों ने कुल पदकों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उसके पहले कई ओलंपिक खेल ऐसे भी संपन्न हुए हैं, जब भारत की तरफ से कामयाबी का सेहरा सिर्फ लड़कियों के सिर बंधा है। आज बैडमिंटन, शूटिंग, क्रिकेट, हॉकी, रेसलिंग और बॉक्सिंग ये ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भारत की बेटियां राज कर रही हैं। अब देश के गांवों से युवा महिला पहलवान और मुक्केबाज निकल रही हैं। खेलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का एक महत्वपूर्ण कारण है, खेलों को लेकर शुरू की गईं कई शानदार सरकारी योजनाएं, जिसमें एक प्रमुख योजना 'खेलो इंडिया' भी शामिल है। इसमें बेहतर प्रशिक्षण की बदौलत भारतीय लड़कियां पूरी दुनिया में कामयाबी के झंडे गाड़ रही हैं। लेकिन इससे बड़ा परिवर्तन उन भारतीय परिवारों का है, जो उनकी मानसिकता में आया है। अब गांवों में भी मां-बाप बेटियों को खेल के मैदान में खुशी-खुशी भेजने लगे हैं। जबकि एक समय तक उन्हें सिर्फ शादी के लिए पाल पोसकर बड़ा किया जाता था।

संभाल रहीं सुरक्षा की कमान

लंबे समय तक भारतीय सेना महिलाओं के लिए बहुत सीमित अवसर प्रदान करती रही है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में यह स्थिति तेजी से बदली है। आज युवा महिलाएं न केवल बड़ी संख्या में सैन्य अधिकारी बन रही हैं बल्कि लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं, वे युद्ध पोतों पर तैनात हैं। भारतीय वायु सेना में महिला फाइटर पायलटों की संख्या लगातार बढ़ रही है। साल 2003 के बाद राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) में महिलाओं के प्रवेश ने इस बदलाव को गति दी है। अब 18-19 वर्ष की लड़कियां सीधी एनडीए में प्रशिक्षण लेकर सेना की स्थायी अधिकारी बन रही हैं। यह बदलाव सिर्फ सैन्य संरक्षण का बदलाव नहीं है बल्कि सामाजिक सोच में आए परिवर्तन का संकेत है। एक समय था, जब सेना को पूर्णतः पुरुषों का पेशा माना जाता था। लेकिन अब युवा महिलाएं सीमा की सुरक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं। नौसेना में भी महिलाएं युद्ध पोतों पर तैनात हैं। लंबी समुद्री यात्राओं का हिस्सा हैं और यह साबित कर रही हैं कि शारीरिक और मानसिक क्षमता के मामले में महिलाएं किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं हैं। पुरुषों के समान ही वे भारतीय सीमाओं की रक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर बढ़ रही हैं।

हासिल कर रहीं वैज्ञानिक उपलब्धियां

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी युवा महिलाएं बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), राष्ट्रीय रक्षा अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) और विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों में महिलाओं की न केवल भागीदारी बहुत तेजी से बढ़ रही है बल्कि कई क्षेत्रों में तो वो पुरुषों से भी आगे हैं। हाल के सालों में देश के सबसे महत्वपूर्ण माने गए चंद्रयान और मंगलयान जैसे अंतरिक्ष मिशनों में भारतीय महिला वैज्ञानिकों की कामयाबी देखते ही बनी है। यही कारण है कि आज देश में विज्ञान के क्षेत्र में दाखिला लेने वाली लड़कियों की बड़ी संख्या सामने आ रही है, क्योंकि आज भारत की एक नहीं बल्कि अनेक अंतरिक्ष अभियानों में भारत की युवा महिलाएं कामयाबी का श्रेय हासिल कर रही हैं। अंतरिक्ष विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और रक्षा अनुसंधान में भी इनकी भूमिका और योगदान पुरुषों से पीछे नहीं है। आईआईटी, आईआईएससी और अन्य प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों में जाकर देख लीजिए, आज ज्यादातर जगहों में महिला छात्र, पुरुष छात्रों के बराबर हैं, कहीं कुछ कम हैं। ये छात्राएं न केवल पढ़ाई कर रही हैं बल्कि अपनी मौलिक मेधा से अपने लक्षित कार्यक्रमों में सफलता हासिल करके उपलब्धियों की नई कहानी रच रही हैं। *

बदल रही है सामाजिक मानसिकता

हमारी बेटियों को यह शानदार सफलताएं मिल रही हैं, तो इसमें समाज की सोच और उसके नजरिए में बदलाव का भी बड़ा योगदान है। पहले जहां बेटियों के लिए सीमित विकल्प होते थे, अब वे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। छोटे शहरों से आने वाली युवा महिलाएं अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा बिखेर रही हैं। डिजिटल शिक्षा, इंटरनेट, सोशल मीडिया ने भी इस परिवर्तन में बड़ी भूमिका निभाई है। इसलिए अब समाज के विभिन्न तबकों से उठकर आने वाली महिलाएं अपने आपको भावी रोल मॉडल में देख सकती हैं और उनसे प्रेरणा हासिल की जा सकती है। हालांकि यह अलग बात है कि अभी महिलाओं ने अपने हिस्से की सारी जंग जीती नहीं है। अभी भी अनेक किस्म की चुनौतियां मौजूद हैं। लेकिन चुनौतियां तो हर क्षेत्र में हैं। असली बात यह है कि महिलाएं लगातार हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। हालांकि कुछ मां-बाप जिनकी वजह से महिलाओं की अभी भी पिछड़ी सोच है, उन्हें जल्द से जल्द अपने को बदलना होगा। नहीं तो वो लोग इन्हें अपने साख से खारिज कर देंगे, जिनकी नजरों में लड़का और लड़की बराबर है। आज के इस एआई दौर में एआई का विश्लेषण बताता है कि आने वाले भविष्य में लड़कियों की मौजूदगी और भी महत्वपूर्ण होगी। विशेषकर इस लिहाज से भी कि अब नई पीढ़ी में लड़कियां जाति और लिंग से परिभाषित नहीं होतीं। अपने काम और काम में हासिल महारत से सम्मान पा रही हैं।

बीते कुछ दशकों में हमारे समाज की महिलाएं घर-परिवार की जिम्मेदारी संभालने के साथ कार्यक्षेत्र में भी शानदार मुकाम हासिल करने लगी हैं। यह नया सामाजिक बदलाव, परिवार और कार्यक्षेत्र में संतुलन की उनकी कुशल भूमिका से ही संभव हो पा रहा है।

परिवार-कार्यक्षेत्र में संतुलन बनातीं महिलाएं

{ बदलाव / अपराजिता }

आठ मार्च, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, केवल एक उत्सव का दिन नहीं है। यह गहरे सामाजिक परिवर्तन और प्रतीक का दिन भी है। यही प्रतीकात्मक परिवर्तन, भारत की युवा महिलाओं की सोच, प्राथमिकताओं और जीवन के निर्णयों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है। एक जमाना था, जब अधिकांश युवतियां विवाह को ही सबसे जरूरी लक्ष्य मानकर जीवन जीती थीं। लेकिन आज भारत की युवा नारी के लिए विवाह एकमात्र जीवन लक्ष्य नहीं है बल्कि यह उसके जीवन के कई विकल्पों में से एक है। भारत की युवा महिलाएं करियर, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को इन दिनों बराबर का महत्व दे रही हैं और उनकी प्राथमिकता में यह सब अचानक नहीं आया, इसके पीछे दशकों की शिक्षा, आर्थिक अवसरों का विस्तार तथा आत्मसम्मान की नई जागृति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्हीं सबके चलते विवाह जो कभी जीवन का एकमात्र प्रथम और आखिरी लक्ष्य हुआ करता था, आज की महिलाओं के लिए वह एक वैकल्पिक बन चुका है।

सोच में आया बड़ा बदलाव: पहले के दौर में जहां लड़कियां परिवार और समाज के दबाव में अपनी शिक्षा और करियर को लेकर समझौता कर लेती थीं, आज वे कतई ऐसा नहीं कर रही हैं। आज युवा महिलाएं अपनी पहचान का केंद्र विवाह को नहीं, अपनी निजी उपलब्धियों (जिनमें करियर और उनकी अपनी रचनात्मकता शामिल है) को विवाह से कहीं ज्यादा तरजीह दे रही हैं। आज की युवा महिलाएं पहले अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हैं, अपनी आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता सुनिश्चित करना चाहती हैं, इसके बाद विवाह के बंधन में बंधती हैं। दिल्ली, बेंग्लुरु, मुंबई, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई और कोलकाता ही नहीं बल्कि रांची, लखनऊ और जयपुर जैसे शहरों में भी अब यह बदलाव तेजी से देखने को मिल रहा है। आज इन शहरों में ही नहीं बल्कि छोटे-छोटे कस्बों में भी युवा महिलाओं की विवाह की उम्र बहुत आसानी से 28 से 30 साल के बीच हो गई है। जबकि एक जमाना था, जब किसी महिला की 20 साल तक अगर शादी नहीं होती थी, तो घर-परिवार में हंगामा मच जाता था। यही नहीं आज देश में 8 करोड़ से ज्यादा महिलाएं अपने स्वतंत्र निर्णय के चलते बिना विवाह किए रह रही हैं। आज के 30-40 साल पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वास्तव में महिलाओं में आया यह बदलाव सिर्फ शादी की उम्र में देरी का बदलाव नहीं है बल्कि उनकी सोच में अपने प्रति आई परिपक्वता का बदलाव है।

मनमुताबिक ले रहीं निर्णय: अब महिलाएं बड़ी सहजता से अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संबंध में निर्णय लेने लगी हैं और यह निर्णय केवल घर से हजारों किलोमीटर दूर जाकर काम करने भर का नहीं है बल्कि यह निर्णय इस मामले में भी है कि उन्हें किस क्षेत्र में अपना करियर बनाना है, कब विवाह करना है और किस तरह की जीवनशैली अपनानी है? डिजिटल युग ने युवा महिलाओं की इस स्वतंत्रता को नए सिरे से मजबूत किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने महिलाओं को जानकारी देने, उन्हें प्रेरित करने और आगे बढ़ने के कई नए अवसर प्रदान किए हैं। आज की युवा महिलाएं देश ही नहीं दुनिया को अपनी नजरों से देख सकती हैं, समझ सकती हैं और अपने संबंध में बेहतर विकल्प चुन सकती हैं। यह स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत नहीं है बल्कि सामाजिक परिवर्तन का संकेत भी है। इस बदलाव में परिवार की भूमिका भी कहीं न कहीं शामिल है। *

बदलती प्राथमिकताओं की नई तस्वीर

- भारत की महिलाओं की औसत विवाह आयु अब 20 से 22 वर्ष से बढ़कर 25 से 28 वर्ष हो चुकी है।
- उच्च शिक्षा में छात्राओं की भागीदारी अब 59 फीसदी तक पहुंच गई है।
- सिविल सेवा परीक्षा में उनकी सफलता की दर बढ़कर 30 से 35 प्रतिशत हो चुकी है।
- स्टार्टअप के इकोसिस्टम में भी अब महिलाएं अपनी हिस्सेदारी हासिल कर रही हैं। आज हजारों की तादाद में युवा महिलाएं हैं, जिनके अब स्टार्टअप चल रहे हैं और उनकी यह संख्या लगातार बढ़ रही है।
- कॉरपोरेट क्षेत्र में महिला कर्मचारियों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है।
- डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से लाखों महिलाएं स्वरोजगार से भी जुड़ रही हैं। इस तरह अब नई पीढ़ी की महिलाएं आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि निर्णायक बन रही हैं।

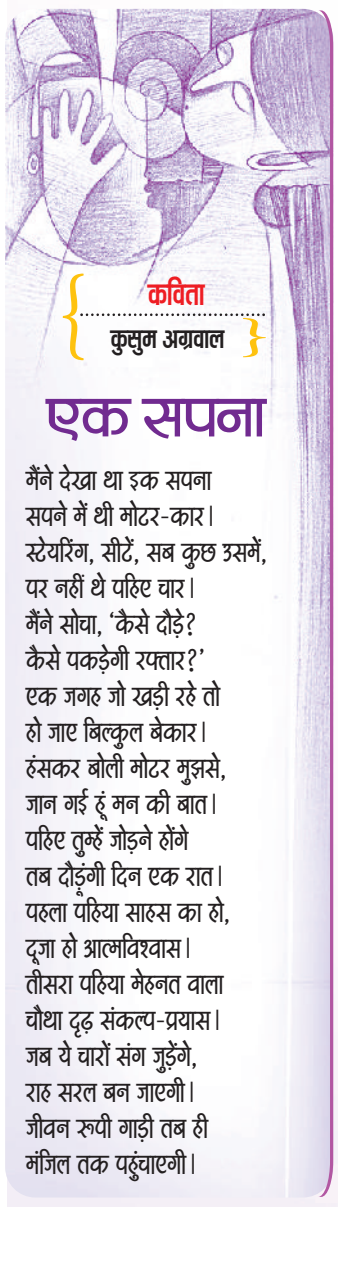

{ कविता / कुसुम अग्रवाल }

एक सपना

मैंने देखा था इक सपना
सपने में थी मोटर-कार।
स्टेयरिंग, सीटें, सब कुछ उसमें,
पर नहीं थे पहिए चार।
मैंने सोचा, 'कैसे दौड़े?
कैसे पकड़ेगी रफ्तार?'
एक जगह जो खड़ी रहे तो
हो जाए बिल्कुल बेकार।
हंसकर बोली मोटर मुझसे,
जान गई हूं मन की बात।
पहिए तुम्हें जोड़ने होंगे
तब दौड़ूंगी दिन एक रात।
पहला पहिया साहस का हो,
दूजा हो आत्मविश्वास।
तीसरा पहिया मेहनत वाला
चौथा दृढ़ संकल्प-प्रयास।
जब ये चारों संग जुड़ेंगे,
राह सरल बन जाएगी।
जीवन रूपी गाड़ी तब ही
मंजिल तक पहुंचाएगी।

{ लघुकथाएं }

सपनों की उड़ान

तुम्हारे जाने की टिकट बुक करवा दूं?' दिवेश का मैसेज आए आधे घंटे हो चुके थे, लेकिन रीमा को कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। मन कुछ कह रहा था, दिमाग कुछ और!

थोड़ी देर में दिवेश का फोन आया, उसने पूछा, 'क्या हुआ तुमने कोई जवाब नहीं दिया?' 'क्या जवाब दूं, समझ नहीं आ रहा मुझे!' रीमा बुझे स्वर में बोली।

'लिटरेचर का इतना बड़ा सेमिनार है, लेकिन तुम सब को छोड़कर हफ्ते भर के लिए बाहर जाना सही नहीं रहेगा। मेरा ध्यान यहीं लगा रहेगा।' इतना कह रीमा ने फोन रख दिया।

एआई इमेज

शाम को दिवेश दफ्तर से आए। सभी रुटीन के हिसाब से अपने-अपने काम में लगे थे। रीमा ने संतुष्टि भरी दृष्टि से सबको देखा, फिर वह भी अपने काम में लग गई।

थोड़ी देर बाद दिवेश रसोई में आए और रीमा के हाथों में एक पैकेट थमाते हुए बोले, 'सबका ध्यान रखना और सबसे प्यार करना अच्छी बात है, लेकिन थोड़ा अपने बारे में भी सोचना पाप नहीं। मैं तुम्हारे लिए अच्छी सी ड्रेस लेकर आया हूं। तुम यही ड्रेस पहन कर अपने सेमिनार में जाना। मैंने तुम्हारे जाने का टिकट बुक कर दिया है।'

'लेकिन बच्चे..!' रीमा ने पूछा।

'हम लोग रह लेंगे मम्मा। बड़े हो गए हैं हम भी। पापा ने हमें सब बता दिया है।' पीछे से बच्चों की आवाज आई।

'हां बिल्कुल! आज मैं, कल को बच्चे अपने सेमिनार और दूसरे कामों से बाहर जाएंगे ही। फिर तुम क्यों सब कुछ छोड़ती रहो! बेझिझक जाओ।' दिवेश बोले।

रीमा का चेहरा खुशी से खिल उठा। अपने सपनों को पंख लगते देख उसकी आंखें छलछला उठीं। *

-अलका 'सोनी'

हार्दिक शुभकामनाएं !

शांति आधे घंटे की छुट्टी मिली है...जल्दी से रोटी खा ले, वरना ठेकेदार चिल्लाएगा।' बेला ने कहा।

'चिल्लाए तो... चिल्लाने दे। पहले मैं अपनी बेटी को दूध पिलाऊंगी...उसे भी तो भूख लग रही होगी।' शांति अपनी छह महीने की बच्ची को गोद में उठाते हुए बोली। कलेजे के टुकड़े को दूध पिलाकर लाड़ लड़ाते-लड़ाते कब आधा घंटा बीत गया...शांति को पता ही नहीं चला।

एआई इमेज

'अरी शांति की बच्ची... चल उठ काम पर लग जा देखती नहीं पांच मिनट ऊपर हो गए हैं...।' ठेकेदार चिल्लाया।

बेला बीच में बोल पड़ी, 'ठेकेदार जी, अभी शांति ने रोटी नहीं खाई है बच्ची को दूध पिला रही थी बेचारी...।'

'चल तू अपना काम कर... फालतू की पंचायत मत कर।'

ठेकेदार ने बेला को डांटा।

उसी समय एक सफेद चमचमाती कार आकर रुकी। उसमें से एक भद्र महिला बाहर निकली। ठेकेदार दौड़ता हुआ उसके पास पहुंचा। उन्हें एक गुलदस्ता देते हुए बोला, 'मैडम, महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।' *

-गोविंद भारद्वाज

घरेलू महिला

आशी को बस घरेलू काम आते हैं। देखो, इस कमरे को कैसा चमका रखा है।' आशी का पति पवन अपने दोस्तों के साथ गपशप करते हुए बोला।

आशी इन दिनों एक परिचित के विवाह समारोह में शामिल होने शहर से बाहर गई हुई थी। पवन ने घर पर दोस्तों के साथ गपशप के बाद सबको विदा किया ही था कि आशी का फोन आया। वह पति से बोली, 'पवन, बस कुछ मिनटों का एक काम है। पूजा घर में एक हरी फाइल रखी है। उसे निकालकर देख लो और पॉलिसी की किश्त जमा कर देना जरा।'

इतना कहकर और बाकी हाल-चाल पूछकर आशी ने फोन काट दिया।

पवन को झुंझलाहट हुई, अब तक पॉलिसी के रुपए आशी ही जमा करती रही थी। 'अजीब है यह आशी भी, इतना सा काम नहीं होता इससे।' बड़बड़ करता पवन पूजा घर में पहुंचा।

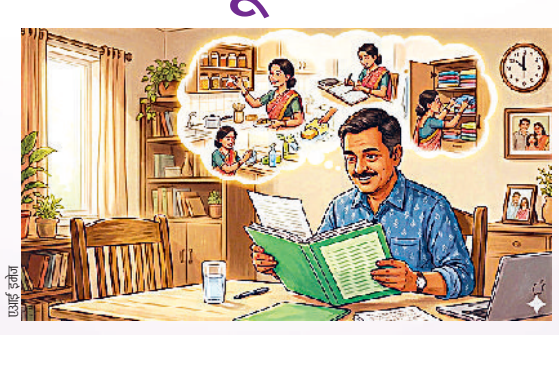
एआई इमेज

हरी फाइल एक नजर में ही ऊपर रखी दिख गई। उसने फाइल को खोला। ऊपर ही वह पॉलिसी रखी थी। उसके बाद उत्सुकता से पवन ने पूरी फाइल पलटकर देख ली। एक-एक कागज को करीने से उसमें रखा गया था। एक सूची भी अलग से बना रखी थी कि किस साल कौन-सी पॉलिसी मैच्योर हो रही हैं। इतना ही नहीं एक छोटी-सी नोटबुक में पासवर्ड भी लिखे थे। आशी को पवन बस घरेलू महिला ही मानता था। लेकिन उसका तो हर काम इतना सलीके से होता है। पवन ने पॉलिसी के रुपए जमा कर दिए। फाइल को करीने से यथास्थान रख दिया।

अब वह अपने शेल्फ को ठीक कर रहा था। जहां उसने अपने निजी कागज कचरे की तरह यहां-वहां घुसा रखे थे। *

-पूनम पांडे

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

स्त्री केंद्रित कहानियां

समाज के दमित, शोषित और वंचित वर्ग के साथ ही मुंशी प्रेमचंद ने स्वाधीनता से पहले स्त्रियों की सामाजिक दशा पर भी कई मर्मस्पर्शी कहानियां लिखी हैं। उनके द्वारा लिखी गई सोलह स्त्री केंद्रित कहानियों का संकलन हाल में पल्लव के संपादन में छपकर आया है। इन कहानियों से गुजरते हुए स्त्री जीवन की अलग-अलग छवियां प्रकट होती हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने मुख्य तौर पर अन्याय, अनाचार और शोषण के विरुद्ध अपना स्वर बुलंद करने वाले स्त्री पात्रों को ही रचा है। फिर वो चाहे 'कुसुम' कहानी की मुख्य पात्र कुसुम हो, जो विवाह होने के बाद भी दहेज के विरोध में आक्रोश प्रकट करते हुए दांपत्य के बंधन को तोड़कर स्वतंत्र रहने के लिए तैयार हो जाती है या 'सती' कहानी की विधवा मुलिया हो, जो अपनी अस्मिता पर कुदृष्टि रखने वाले का पूरी दृढ़ता से प्रतिकार करती है। या फिर 'विध्वंस' कहानी की भुनगी, जो अपने परिश्रम का वाजिब मूल्य मांगने से नहीं झिझकती है। कह सकते हैं कि लगभग एक सदी पहले के संकीर्ण और परंपरावादी सोच से ग्रस्त भारतीय समाज में भी प्रेमचंद की कहानियां, स्त्री सशक्तिकरण की आवाज बुलंद करती हैं। *

पुस्तक: प्रेमचंद की स्त्री कथाएं,
संपादन: पल्लव, **मूल्य:** 250 रुपए,
प्रकाशक: राजपाल एंड संस, दिल्ली

विगत 5 मार्च से आरंभ हुआ गोवा का शिग्मो उत्सव, आगामी 18 मार्च तक आयोजित होगा। यह गोवा की सांस्कृतिक पहचान है। यह उत्सव स्थानीय निवासियों की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है और उन्हें अपनी परंपरा पर गर्व करने का अवसर भी देता है। इस उत्सव की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर।

गोवा की लोक-संस्कृति का रंगोत्सव शिग्मो

सांस्कृतिक पर्व

धीरज बसाक

भारत के पश्चिमी तट पर स्थित गोवा, अपनी समुद्र तटीय सुंदरता के कारण पर्यटकों के बीच जितना लोकप्रिय है, उतना ही अपने समृद्ध लोक संस्कृति के कारण भी यह प्रसिद्ध है। गोवा लोक संस्कृति का सबसे समृद्ध घर माना जाता है और इस समृद्ध लोक संस्कृति का सबसे जीवंत और रंगीन प्रतीक है शिग्मो फेस्टिवल या शिग्मो उत्सव। शिग्मो उत्सव केवल एक वार्षिक पर्व भर नहीं है, बल्कि गोवा के ग्रामीण जीवन, लोक परंपराओं, लोक नृत्यों और ऐतिहासिक स्मृतियों का संवेदनशील और सामूहिक उत्सव भी है।

वसंत के आगमन का उत्सव

वास्तव में शिग्मो, गोवा का पारंपरिक वसंत उत्सव है, जो होली से शुरू होकर चैत्र माह में एक पखवाड़े तक मनाया जाता है। इसलिए शिग्मो उत्सव को गोवा की लोक आत्मा का उत्सव कहते हैं। क्योंकि इसमें यहां के किसान, मजदूर और ग्रामीण समुदायों की जीवनशैली, उनकी आस्था और उनकी ऐतिहासिक चेतना पूरी भव्यता के साथ अभिव्यक्त होती है। शिग्मो का अर्थ है शिशिरोत्सव अर्थात शीत ऋतु के अंत और वसंत के आगमन का उत्सव। यह पर्व प्राचीन काल से गोवा के कुछ समुदायों द्वारा मनाया जाता रहा है। फसल कटाई के बाद जब किसान अपनी मेहनत के फल से संतुष्ट होते हैं तो प्रकृति और देवताओं के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए शिग्मो उत्सव मनाते हैं।

एक हजार साल पुराना उत्सव

इतिहासकारों के मुताबिक शिग्मो उत्सव मनाने की परंपरा कम से कम 1000 साल पुरानी है। पुर्तगाली शासन के दौरान भी गोवा के स्थानीय लोगों ने इस उत्सव को अपनी सांस्कृतिक पहचान के रूप में बनाए रखा। वास्तव में यह उत्सव गोवा के हिंदू समुदाय के लिए विशेष मायने रखता है। लेकिन इसकी लोक-रंगत और सांस्कृतिक आकर्षण के कारण आज इसमें सभी समुदायों की भागीदारी होती है।

कई लोकनृत्यों का आयोजन

शिग्मो उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें पारंपरिक लोकनृत्य और संगीत के भव्य आयोजन होते हैं। इन नृत्यों में गोवा के ग्रामीण जीवन, युद्ध कथाओं, पौराणिक प्रसंगों और सामाजिक घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है। शिग्मो उत्सव में शामिल प्रमुख लोक नृत्यों में घोड़े मोदनी नृत्य सबसे प्रमुख है। वास्तव में यह योद्धाओं का नृत्य होता है। माना जाता है कि प्राचीनकाल में विजयी योद्धा, घोड़ों पर सवार होकर नृत्य किया करते थे। लेकिन आज लोक कलाकार घोड़े की मुखाकृति के मुखौटे पहनकर और हाथ में तलवार लेकर नृत्य करते हैं। यह नृत्य वास्तव में गोवा के गौरवमयी इतिहास का प्रतीक है। इस उत्सव का दूसरा प्रमुख नृत्य हैं-रोमातामेल। यह सामूहिक नृत्य है, इसमें कलाकार ढोल, ताशा और झांझे की धुन पर नाचते हैं। इनके अलावा जो प्रमुख नृत्य इस उत्सव में खूब देखने को मिलते हैं, उसे फुगड़ी और जागर नृत्य कहते हैं। ये नृत्य गोवा के ग्रामीण और आदिवासी जीवन को दर्शाते हैं। इन प्रमुख नृत्यों के माध्यम से गोवा में लोग शिग्मोत्सव में सदियों से चली आ रही अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत करते हैं।

निकलती हैं भव्य झांकियां

शिग्मो उत्सव के दौरान गोवा के प्रमुख शहरों जैसे पणजी, मडगांव, वास्को, पोंडा और मापुसा में भव्य शोभा यात्राएं भी निकाली जाती हैं। इन शोभा यात्राओं में रंग-बिरंगी झांकियां होती हैं, जो पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक विषयों को दर्शाती हैं। इन झांकियों में रामायण और महाभारत के दृश्य, गोवा के लोक देवताओं की कथाएं, पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक जागरूकता के संदेश दिए जाते हैं। यह परंपरा आधुनिक, सामाजिक चेतना का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करती है।

ग्रामीण और शहरी शिग्मो

ग्रामीण और शहरी शिग्मो उत्सव वैसे एक-दूसरे से थोड़े भिन्न होते हैं, लेकिन ये दो रूप भले अलग हों, लेकिन उनकी आत्माएं एक होती हैं। इन दो अलग-अलग यानी शहरी और ग्रामीण शिग्मो को क्रमशः धाकटो शिग्मो यानी छोटा शिग्मो और व्हाडलो शिग्मो यानी बड़ा शिग्मो कहा जाता है। छोटा शिग्मो ग्रामीण क्षेत्रों में मनाया जाता है, जो ज्यादा पारंपरिक होता है और बड़ा शिग्मो, शहरी क्षेत्रों में आयोजित होता है और इसमें बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक झांकियां और शोभा यात्राएं निकाली जाती हैं। ग्रामीण शिग्मो में ज्यादा पारंपरिक और धार्मिक तत्व शामिल होते हैं, जबकि शहरी शिग्मो में पर्यटन और बहु-सांस्कृतियों का प्रदर्शन अधिक होता है, क्योंकि शहरी शिग्मो में बड़े पैमाने पर यहां आने वाले पर्यटक भी हिस्सा लेते हैं।

संस्कृति-संरक्षण का माध्यम

शिग्मो उत्सव केवल एक पारंपरिक लोक त्योहार भर नहीं बल्कि गोवा की सांस्कृतिक धड़कन है। शिग्मो के रंग, संगीत और नृत्य गोवा के लोगों की आत्मा को अभिव्यक्त करते हैं। इसके जरिए पीढ़ियों से चली आ रही लोक परंपराओं को संरक्षण मिलता है। यह विभिन्न समुदायों के बीच एकता और सहयोग की भावना बढ़ाता है। यह महोत्सव युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ता है। आज के आधुनिक और वैश्विक युग में जब कई पारंपरिक उत्सव अपनी पहचान खो रहे हैं, तब शिग्मो उत्सव गोवा की सांस्कृतिक निरंतरता का पर्याय बन गया है। *

क्या आप अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित करते हैं, लेकिन इसे प्राप्त नहीं कर पाते? ऐसे में यह जानना बहुत जरूरी है कि किन वजहों से आप अपने लक्ष्य से दूर रह जाते हैं और किन बातों का ध्यान रखकर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है, जानिए।

आप क्यों रह जाते हैं अपने लक्ष्य से दूर

सेल्फ मोटिवेशन

शिखर चंद जैन

कई लोग प्लान बनाते हैं, लक्ष्य भी तय करते हैं, लेकिन उन्हें कभी अचीव ही नहीं कर पाते। हम सभी जानते हैं कि जीवन में सफलता की पहली सीढ़ी है- लक्ष्य का निर्धारण। लक्ष्य वह मार्गदर्शक है, जो हमें भीड़ में खोने से बचाता है और चुनौतियों से लड़ने का साहस देता है। किसी भी महान कार्य की शुरुआत एक छोटे से संकल्प से ही होती है, जो आगे चलकर एक स्पष्ट लक्ष्य का रूप ले लेता है।

सोचना पर्याप्त नहीं: 'मैं यह करना चाहता हूं' ऐसा सोचकर लक्ष्य बनाना काफी नहीं है। स्पष्टता ही लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता की पहली शर्त है। जब आप गहराई से समझ लेते हैं कि आप कौन हैं, आप वास्तव में क्या चाहते हैं और आपको कहां पहुंचना है, तभी आप एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में दस गुना अधिक व तेज उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं। लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि वह उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है।

स्वयं का करें आकलन: स्वास्थ्य, आनंद, रिश्ते और वित्तीय स्वतंत्रता, ये जीवन के चार स्तंभ हैं, जिन्हें संतुलित करके आप असाधारण सफलता पा सकते हैं। जब आप इन चार क्षेत्रों में से हर एक में खुद को 1 से 10 अंक देकर ईमानदारी से आकलन करते हैं तो आपको तुरंत समझ आने लगता है कि आपके जीवन की सबसे ज्यादा समस्याएं किस क्षेत्र से जुड़ी हैं? जाहिर है, वहीं जहां आपका स्कोर कम होता है। यानी उसी बिंदु पर सबसे अधिक फोकस करने की जरूरत होती है।

अपना दृष्टिकोण तय करें: लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में आपकी मानसिकता दो तरह की हो सकती है, समृद्धि का दृष्टिकोण या अभाव का दृष्टिकोण। समृद्धि का दृष्टिकोण आपको आत्मविश्वासी, सकारात्मक और समाधान केंद्रित बनाता है। आप दुनिया को अवसरों से भरा मानते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि जीवन में आगे बढ़ने का अच्छा समय है। आप में यह जागरूकता बनी रहती है कि दुनिया में चुनौतियां हमेशा थीं, हैं और रहेंगी। मगर आप अपनी ऊर्जा इस बात पर केंद्रित रखते हैं कि क्या बेहतर किया जा सकता है? यह सोच आपको रचनात्मक, सक्रिय और लक्ष्य उन्मुख बनाती है। वास्तव में लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि ऐसा उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है। जब इंसान की आंखों में एक स्पष्ट स्वप्न और उसे पाने का दृढ़ निश्चय होता है, तो वह साधारण से असाधारण बनने का सफर शुरू कर देता है। इसके विपरीत दूसरा दृष्टिकोण आपको सीमित कर देता है। इसमें आप किस्मत के भरोसे बैठ जाते हैं और तरह-तरह के बहाने बनाने लगते हैं। इस दृष्टिकोण से कभी कुछ हासिल नहीं हो पाता है।

लक्ष्य पर शिद्दत से टिके रहें: अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए यह जानना भी जरूरी है कि आप इन्हें क्यों हासिल करना चाहते हैं? अगर यह केवल सतही कारणों से या दूसरों की उम्मीद पर खरा उतरने के लिए है तो आप उसके प्रति गंभीर नहीं हो पाएंगे। इसकी बजाय स्पष्ट रूप से यह जानें कि इन लक्ष्यों का आपके आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक या व्यक्तिगत जीवन पर क्या असर पड़ने वाला है? इससे आपको अपने लक्ष्य पर टिके रहने का हौसला मिलेगा।

मुश्किल लक्ष्यों को आसान बनाएं: अपने लक्ष्यों को सफल बनाने के लिए उन्हें स्पष्ट और छोटे हिस्सों में विभाजित कर लें। उन्हें प्रबंधनीय और ठोस कदमों में विभाजित करें। साथ ही अपने लक्ष्यों को निर्धारित समय और प्राथमिकता दें। उन्हें अपने कैलेंडर में किसी महत्वपूर्ण बैठक की तरह रखें और तय समय पर उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। हां, अपने संकल्पों के रास्ते में जरा लचीले भी रहें, क्योंकि जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। योजनाओं में आवश्यकता के अनुसार बदलाव करें। किसी गलती या असफलता पर झुंझलाने या हार मानने की बजाय खुद को माफ करें और आगे बढ़ें। अपनी प्रगति की समीक्षा भी करते रहें। *

समझ लें सटीक फॉर्मूला

आपके लक्ष्य छोटे हों या बड़े, उनमें सफलता जरूर मिलेगी अगर आप अपने लक्ष्य को निर्धारित करने और उसे पाने का सही फॉर्मूला जान लें। इसके लिए कुछ बातों को समझ लें।

- लक्ष्य की कोई डेडलाइन ना हो तो वह सिर्फ एक कल्पना या सपना मात्र बनकर रह जाता है। इसलिए हर लक्ष्य की एक समय सीमा तय करें।
- लक्ष्य और समय सीमा तय हो जाए तो वह आपका उद्देश्य बन जाता है। इसे पूरा करने की योजना बनाएं।
- लक्ष्य पाने के लिए आपको निरंतरता का भी ध्यान रखना होगा। यानी आपको नियमित रूप से अपने लक्ष्य को हासिल करने में जुटा रहना पड़ेगा।

जानकारी

अंजू जैन

आजादी के बाद, भारत में तेजी से विकसित हो रहे सरकारी औद्योगिक उपक्रमों को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता थी, जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण थे। इसके लिए एक मजबूत सुरक्षाबल की जरूरत महसूस की गई। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए 10 मार्च 1969 को केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल यानी सीआईएसएफ (सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्स) की स्थापना की गई। भारत की संसद के एक अधिनियम द्वारा इसका गठन किया गया, जो केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत काम करता है। इस सुरक्षा बल का ध्येय वाक्य है-संरक्षण और सुरक्षा।

आगामी 10 मार्च को सीआईएसएफ का 57वां स्थापना दिवस मनाया जाएगा। देश की महत्वपूर्ण धरोहरों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा में तैनात केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के योगदान और भूमिका पर एक नजर।

धरोहरों-औद्योगिक प्रतिष्ठानों का रक्षक सीआईएसएफ

प्रमुख कार्य

अपने नाम के मुताबिक ही सीआईएसएफ का प्रमुख आरंभिक कार्य औद्योगिक सुरक्षा ही था। सरकारी कारखानों, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों और बिजली संयंत्रों की सुरक्षा का जिम्मा इस बल को दिया गया। बाद में समय-समय पर इसकी जिम्मेदारियां बढ़ती गईं। आगे चलकर यह अर्धसैन्यबल हवाई अड्डों, बंदरगाहों और मेट्रो की सुरक्षा कार्य भी करने लगा। इस बल के जवान देश की ऐतिहासिक इमारतों, स्मारकों और धरोहरों जैसे-लाल किला, ताजमहल आदि की रक्षा भी करते हैं। वीआईपी सुरक्षा के तहत विशिष्ट व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करना भी इनकी जिम्मेदारी में शामिल है।

बढ़ता संख्या बल

जब 1969 में सीआईएसएफ की शुरुआत हुई थी, तब इसमें सिर्फ 2,800 जवान थे। आज यह दुनिया के सबसे बड़े सुरक्षा बलों में से एक है, जिसमें 2,00,000 (दो लाख) से भी ज्यादा जवान शामिल हैं।

आग बुझाने में भी माहिर

सीआईएसएफ के पास अपना एक खास 'फायर विंग' भी है। यह भारत का अकेला ऐसा सुरक्षा बल है, जिसके पास फैक्ट्रियों और उद्योगों में आग बुझाने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित टीम होती है।

स्मार्ट डॉग स्क्वाड

सीआईएसएफ के पास बहुत ही स्मार्ट डॉग्स की तेजतर्रार स्क्वाड भी है। इनके डॉग्स इतने ट्रेंड होते हैं कि वे छिपी हुई खतरनाक चीजों का पलक झपकते ही पता लगा लेते हैं। कई बार सीआईएसएफ के डॉग स्क्वॉड ने शातिर किस्म की साजिशों का भंडाफोड़ किया है।

एयरपोर्ट सुरक्षा में संलग्न

देश के तमाम एयरपोर्ट्स पर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल को उनकी विशिष्ट विशेषज्ञता, उन्नत तकनीक के कारण तैनात किया गया है। वे हवाई अड्डे की सुरक्षा के विशेषज्ञ माने जाते हैं, जो यात्रियों की तलाशी, सामान की स्क्रीनिंग और आतंकवाद विरोधी अभियानों में उच्च दक्षता प्रदान करते हैं। इन सैनिकों को विशेष रूप से नागरिक हवाई अड्डों की सुरक्षा के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, जो सामान्य पुलिस या दूसरे अर्धसैनिक बलों के प्रशिक्षण से अलग होती है। सन् 1999 में इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट आईसी-814 के अपहरण के बाद, भारत सरकार ने सुरक्षा मजबूत करने के लिए हवाई अड्डों की सुरक्षा सीआईएसएफ को सौंपने का निर्णय लिया। इसकी शुरुआत फरवरी 2000 में जयपुर हवाई अड्डे से की गई। ये अर्धसैनिक, आधुनिक उपकरणों का उपयोग करके यात्रियों की गहन तलाशी और हैंड बैगेज की जांच सुनिश्चित करते हैं, जो एयरपोर्ट सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। ये अंतरराष्ट्रीय विमानन सुरक्षा मानदंडों का पालन करते हैं, जो अन्य सुरक्षा बलों की तुलना में अधिक उपयुक्त हैं। साथ ही इस बल के जवान संभावित खतरों के लिए 24X7 निगरानी करते हैं और त्वरित प्रतिक्रिया टीम के साथ किसी भी आपात स्थिति से निपटने में सक्षम होते हैं। ये एयरपोर्ट के संवेदनशील क्षेत्रों में असामाजिक तत्वों को पकड़ने और किसी भी प्रकार की तस्करी को रोकने में भी माहिर होते हैं। वर्तमान में 70 से अधिक एयरपोर्ट्स पर सीआईएसएफ के जवानों की तैनाती है। यद्यपि अब देश के लगभग 60 हवाई अड्डों पर गैर-प्रमुख ड्यूटी के लिए निजी सुरक्षा गार्ड्स भी लगाए जा रहे हैं, लेकिन प्रमुख सुरक्षा और स्क्रीनिंग का काम अभी भी मुख्य रूप से सीआईएसएफ ही करती है। *

महिलाएं भी नहीं हैं पीछे

देश के अन्य सुरक्षा बलों पुलिस, पीएसी, बीएसएफ और सशस्त्र सैन्य (थल सेना, वायु सेना और नौसेना) बलों की तरह ही सीआईएसएफ में भी महिलाएं अपनी सेवाएं दे रही हैं। वर्तमान में इस अर्धसैन्य बल में लगभग साढ़े बारह हजार यानी आठ प्रतिशत महिलाएं तैनात हैं। सरकार का लक्ष्य जल्द ही इनकी संख्या बढ़ाकर दस प्रतिशत करने का है। मुख्य तौर पर महिलाएं एविएशन सुरक्षा, क्विक रिएक्शन टीम और सीआईएसएफ कमांडो टीम में शामिल होकर अपनी सेवाएं दे रही हैं। किसी भी अन्य सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्सेस की तुलना में सीआईएसएफ में सबसे अधिक महिलाएं कार्यरत हैं।

स्त्रियों के संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों का विषय बनाया जाता रहा है। आज महिला दिवस के अवसर पर हम आपको कुछ ऐसी फिल्मों के बारे में बता रहे हैं, जिनमें स्त्री संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को प्रमुखता से उभारा गया है।

फिल्मों में खूब दिखीं महिला संघर्ष-शक्ति की कहानियां

सिने ट्रेंड

अशोक जोशी

हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा में स्त्रियों का उल्लेखनीय योगदान रहा। जिन दिनों सिनेमा की शुरुआत हो रही थी, उसमें महिलाओं का काम करना अघोषित रूप से प्रतिबंधित माना जाता था। तब पुरुष कलाकार ही नारी का स्वांग भर पर्दे पर नजर आया करते थे। लेकिन कुछ समय बाद पर्दे पर नायिकाओं के पर्दापण से अब तक स्त्री कलाकार, सिनेमा का सबसे अनिवार्य हिस्सा बन गई हैं। फिल्मों में समय-समय पर नारी जीवन से जुड़ी समस्याएं, संघर्ष और उनके सशक्तिकरण जैसे विषयों को गंभीरता से प्रदर्शित किया जाता रहा है।

बेमेल विवाह की समस्या: हिंदी सिनेमा में वी. शांताराम, नारी समस्याओं को पर्दे पर सशक्त तरीके से उठाने वाले फिल्मकार थे। उनकी 1937 में प्रदर्शित फिल्म 'दुनिया न माने' बेमेल विवाह की समस्या पर केंद्रित थी। यह फिल्म स्त्रीत्व की गरिमा को बेहद खूबसूरती से उभारती है। शांता आप्टे ने नायिका नीरा की भूमिका में प्राण फूंक दिए थे। नारी को भोग्या, चरणों की दासी और वस्तु मानने वालों को यह फिल्म प्रभावी सबक सिखाती है।

जातिगत विसंगतियों पर कटाक्ष: 1936 में प्रदर्शित फिल्म 'अछूत कन्या' सवर्ण लड़के और अछूत लड़की की एक दारुण प्रेम कहानी है। यह एक दुःखांत फिल्म है। इस वर्जित और उपेक्षित विषय को पहली बार फिल्म के माध्यम से लोगों के बीच लाने का साहसिक प्रयास किया गया था। इससे मिलते-जुलते विषय पर 1959 में विमल राय ने 'सुजाता' बनाई, जो फिर से अछूत युवती और सवर्ण युवक के प्रेम की कहानी है। विमल राय की यह फिल्म आजादी के बाद इस विषय पर बनाई गई पहली फिल्म थी। इस फिल्म के एक दृश्य में रवींद्रनाथ ठाकुर कृत नाटक 'चांडालिका' का मंचन किया जाता है। इस नाटक में भगवान बुद्ध अछूत स्त्री के हाथों से पानी पीते हैं और सभी जातियों की समानता को व्याख्यायित करते है। राजकपूर और मीना कुमारी की ख्वाजा अब्बास निर्देशित फिल्म 'चार दिल चार राहें' की कहानी भी ऐसे ही विषय के इर्द-गिर्द घूमती है। इसी क्रम में श्याम बेनेगल की फिल्में 'अंकुर', 'भुवन शोम', 'मृगया', 'भूमिका', 'मंडी', 'चक्र' आदि में हाशिए पर धकेल दी गई स्त्रियों की सामाजिक स्थिति की दर्दमय झांकी प्रस्तुत की गई हैं।

दिखे स्त्री संघर्ष के विविध रूप: हिंदी फिल्मकारों ने भारतीय स्त्री के सभी रूपों को अपनी फिल्मों में प्रस्तुत किया है। घरेलू स्त्री, कामकाजी स्त्री, किसान स्त्री, विवाहित और अविवाहित स्त्री, जुझारू स्त्री, संघर्षशील स्त्री और अन्याय, अत्याचार से लड़ने वाली स्त्री के कई रूप हिंदी फिल्मों में नजर आते रहे हैं। महबूब खान द्वारा निर्देशित फिल्म 'औरत' और उसका संशोधित संस्करण 'मदर इंडिया' भारतीय नारी के संघर्ष और त्रासदी की महागाथा है, जिसमें ग्रामीण महाजनी सभ्यता की क्रूरता और अत्याचार से लड़ती हुई नारी की मार्मिक कहानी है। ग्रामीण सामंती अत्याचार से उत्पन्न डाकू समस्या को उजागर करने वाली फिल्मों में नारी की विवशता को 'मुझे जीने दो', 'गंगा जमुना', 'जिस देश में गंगा बहती है' और शेखर कपूर की 'बैंडिट क्वीन' में प्रभावी ढंग से पर्दे पर उतारा गया है।

राजकुमार संतोषी की फिल्म 'लज्जा' में समाज के अलग-अलग परिवेशों से आने वाली तीन स्त्री पात्रों के दारुण शोषण और मुक्ति के संघर्ष को दर्शाया गया है। इनकी ही फिल्म 'दामिनी' में बलात्कार से पीड़ित घर की एक नौकरानी को न्याय दिलाने की कहानी को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत किया गया है।

आर.के. बैनर की फिल्मों में स्त्री: राजकपूर द्वारा निर्मित-निर्देशित फिल्मों में भी स्त्री जीवन और संघर्ष के विविध रूप सामने आते हैं। 'सत्यम शिवम सुंदरम', 'राम तेरी गंगा मैली' जैसी फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दास्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करवाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।

बी.आर. चोपड़ा की फिल्मों में स्त्री संघर्ष: फिल्मों में नारी की स्थिति का चित्रण करने में बी. आर. चोपड़ा का भी उल्लेखनीय योगदान रहा है। 1956 में उन्होंने फिल्म 'एक ही रास्ता' में विधवा विवाह करवाकर सामाजिक सुधार का संदेश दिया। 'साधना' (1958) समाज में वेश्याओं की स्थिति और उसके प्रति सामाजिक नजरिए पर प्रकाश डालने में सफल रही। साल 1959 में उन्होंने अविवाहित मातृत्व की समस्या से जूझने वाली स्त्रियों के जीवन के बिखराव और उसकी परिणति को दर्शाने वाली सशक्त फिल्म 'धूल का फूल' का निर्माण किया। 'इंसाफ का तराजू' (1980) में बलात्कार से पीड़ित लड़की की कहानी को साहसिक रूप से प्रस्तुत किया। 1982 में फिल्म 'निकाह' में उन्होंने तलाक और हलाला जैसे विषयों को छूने का प्रयास किया।

नारी संघर्ष की दास्तान सुनाती कुछ और फिल्में: बॉलीवुड में स्त्रियों के संघर्ष और नारी सशक्तिकरण पर तमाम बेहतरीन फिल्में बनी हैं। 'खून भरी मांग', 'मृत्युदंड', 'वारिस', 'थप्पड़', 'कहानी', 'लापता लेडीज', 'गंगूबाई काठियावाड़ी', 'नीरजा', 'क्वीन', 'गुलाब गैंग', 'इंग्लिश-विंग्लिश', 'पिंक', 'दंगल', 'छपाक', 'मर्दानी', 'गुंजन सक्सेना' जैसी कितनी ही फिल्में हैं, जो स्त्री संघर्ष, स्त्री सशक्तिकरण सहित स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को छूती हैं। *